'एक अनूठी सामाजिक, आध्यात्मिक, पर्यावरणीय व साहित्यिक मासिक पत्रिका'

होली की ढेरों शुभकामनाएं

अमर ज्योति

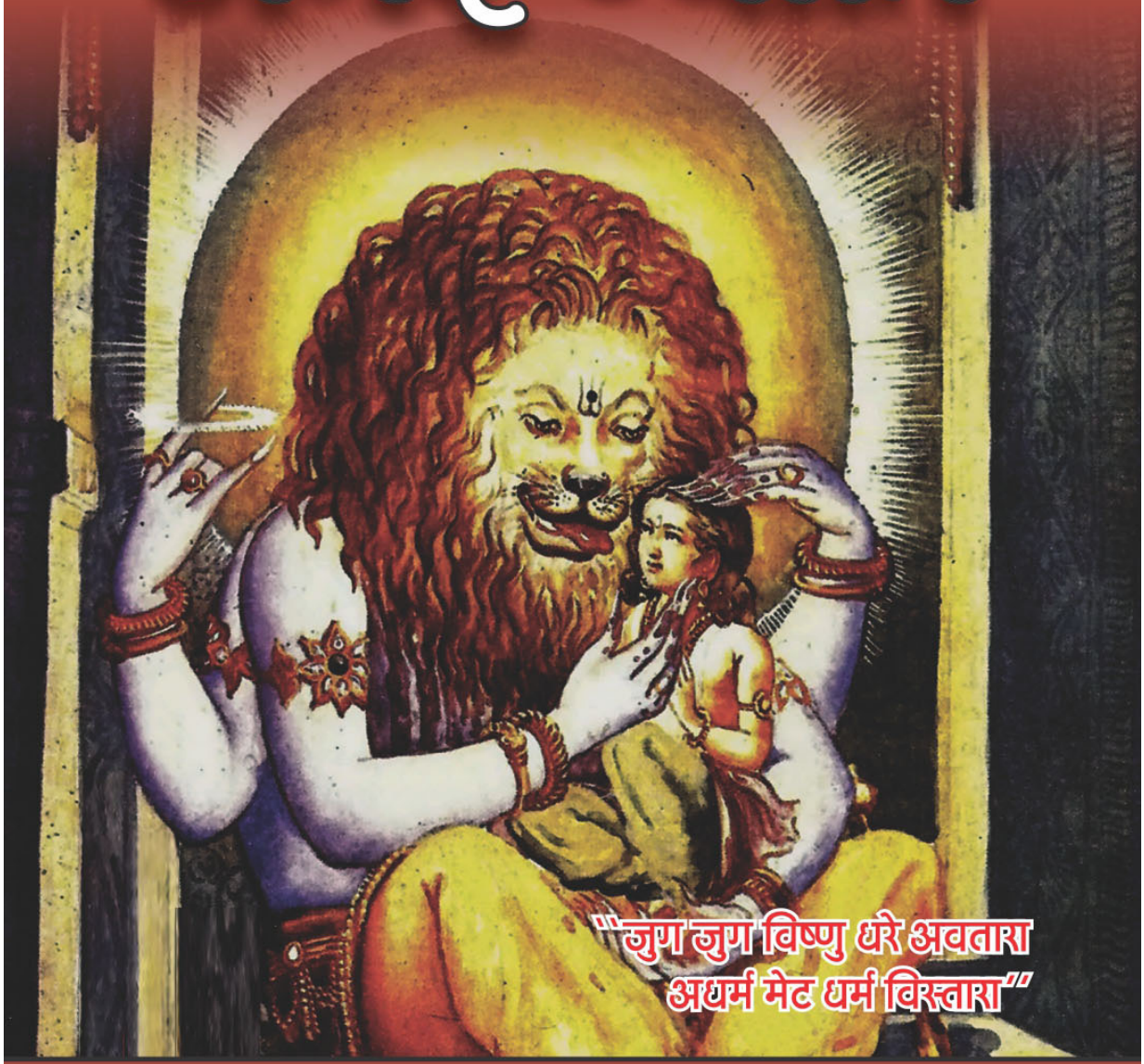

"जुग जुग विष्णु धरे अवतारा
अधर्म मेट धर्म विस्तारा"

वर्ष 63 ◆ अंक 3

मार्च, 2012

अमर ज्योति का ज्ञान दीप अपने घर आंगन में जलाइये

संपादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक

सिकन्दर जौहर

Mob.: 9996472685

सभा कार्यालय

Tel.: 01662-225804

E-mail : editor@amarjyotipatrika.com

info@amarjyotipatrika.com

Website : www.amarjyotipatrika.com

इस पत्रिका में व्यवस्थापक के अतिरिक्त उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : ₹ 50

आजीवन सदस्यता शुल्क : ₹ 500

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें।"

क्र.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	1
2.	सबद -6	2
3.	साखी	3
4.	चौ. कुलदीप बिश्नोई महासभा के संरक्षक मनोनीत	4
5.	बिश्नोई पंथ एवं होली	5
6.	पहलादा सूं वाचा कीवी आयो बारा काजै	8
7.	प्रहलादो रहियो शरण हमारी	11
8.	सबदवाणी में गुरु महिमा	14
9.	बधाई संदेश	17
10.	सामाजिक क्षति	18
11.	बिश्नोई पंथ परिचय-2	19
12.	आरती कीजै नरसिंह कुंवरजी की, होलियाए दोहे	20
13.	विश्व अहिंसा का पथ प्रदर्शक: बिश्नोई धर्म	21
14.	ध्यान का महत्व	23
15.	समाज का आधार युवा वर्ग	24
16.	मुक्तिधाम मुकाम में फाल्गुन मेला-एक रिपोर्ट	25
17.	हलचल	27
18.	फार्म-4	32

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय...

पहलाद बाट थे बहियो

आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का प्राण है। हमारे यहां अध्यात्म व भक्ति से रहित जीवन रसहीन व निरर्थक माना जाता है। हमारे इतिहास में भी सर्वाधिक आदर के साथ नाम उन्हीं का लिया जाता है जिन्होंने अपना जीवन परमपिता परमात्मा के नाम समर्पित कर दिया था चाहे वह भक्त प्रह्लाद हो या भक्त ध्रुव। भक्त प्रह्लाद और भक्त ध्रुव आध्यात्मिक जगत के वे उज्ज्वल नक्षत्र हैं जो भक्ति की राह पर चलने वाले हर पथिक का पथ आलोकित करते हैं। भक्ति का मार्ग सीधा सपाट न होकर अनेक अवरोधों से भरा हुआ होता है। आन्तरिक विकारों के साथ-साथ बाहरी अवरोध भी इस पथ के कंकड़ हैं। इस पथ पर चलते हुए कदम-कदम पर ठोकर खाने या रपटने का भय रहता है। यही कारण है कि इस पथ पर चलने वालों को भक्त कवियों ने शूरवीर कहा है। भक्ति मार्ग पर अग्रसर होना कायर का कार्य नहीं है क्योंकि इस राह के हर प्रह्लाद को पग-पग पर हिरण्यकश्यप मिलते हैं।

भक्त प्रह्लाद का उज्ज्वल चरित्र हमें यही सिखाता है कि भक्ति का मार्ग दृढ़ता की मांग करता है। लोभ, लालच, भय, दण्ड आपको डिगाने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं। यदि इन सबसे टकराते हुए आप आगे निकल जाएंगे तो परमात्मा स्वयं आगे आकर आपका हाथ थाम लेंगे। भक्त प्रह्लाद की दृढ़ता और आसुरी शक्तियों से संघर्ष आज हम सबके लिए एक प्रेरक उदाहरण बन चुका है। आज भी सज्जनों की राह निष्कंटक नहीं है। हमें प्रह्लाद से यह सीखना चाहिए कि विजय सदैव भगवद् भक्ति की ही होती है। यदि भावना निष्कलंक और सच्ची है तो परमात्मा को अवतार लेना ही पड़ेगा। प्रह्लाद के तैंतीस करोड़ अनुयायी हमें यही कह रहे हैं कि हमें सदैव सत्य का ही साथ देना चाहिए, भले ही मृत्यु का सामना करना पड़े।

होली के त्योहार का सबसे बड़ा संदेश भगवद् भक्ति का है। प्रह्लाद के बचने की खुशी मनाने के साथ-साथ हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम पूर्ण समर्पण के साथ उसी राह पर चलेंगे जिस राह पर चलकर भक्त प्रह्लाद स्वयं मोक्षगामी हुए और तैंतीस करोड़ भक्तों का भी उद्धार किया। खेद है कि आज हम होली के इस अति पवित्र और गंभीर अर्थ को भूलकर होली को केवल हुड़दंग का त्योहार मान बैठे हैं। होली के अवसर पर एक दूसरे पर कीचड़ फैंकने और शराब पीने का होली से कोई सम्बन्ध ा नहीं है। यह तो आसुरी प्रवृत्ति का प्रतीक है। फाग के दिन रंग लगाकर आपसी प्रेम और भाईचारे का प्रदर्शन भी अपनी जगह है। पर इस त्योहार का मूल संदेश तो भगवान विष्णु की दृढ़ भक्ति ही है।, जिसे हमें हृदय से आत्मसात करना चाहिए। एक जांभाणी कवि के शब्दों में कहें तो होली का संदेश है-

पहलाद बाट थे बहियो, विष्णु-विष्णु ही करता रहियो।

सबद–6

उधरण कान्हावत यूं कहै, दोय कहै छै देव।
भिन्न भिन्न समझाइयों, हमें बतावों भेव।

उधरण राजपुत्र ने इससे पूर्व तीन शब्दों को ध्यान पूर्वक श्रवण किया तब यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं या दो भिन्न–भिन्न है। इस शंका के समाधानार्थ उधरण ने प्रार्थना की। गुरु महाराज ने उत्तर दिया–

ओ३म् भवन भवन म्हें एका जोती, चुन चुन लिया रतना मोती।

भावार्थ– सम्पूर्ण चराचर सृष्टि के कण–कण में परम तत्व रूप परब्रह्म की सामान्य ज्योति सर्वत्र है अर्थात् प्रत्येक शरीर में स्थित जीवात्मा उसी एक परमात्मा का ही प्रतिबिम्ब है। जैसा बिम्ब रूप परमात्मा है वैसे ही प्रतिबिम्ब रूप जीव है, दोनों में कोई भेद नहीं है। यदि किसी को भेद मालूम पड़ता है तो वह केवल उपाधि के कारण ही हो सकता है। गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि जीव सभी एक होने पर भी तथा परमात्मा का अंश होने पर भी, हमारे जैसे अवतारी पुरुष सभी जीवों का उद्धार नहीं करते क्योंकि सभी जीव अब तक ईश्वर प्राप्ति की योग्यता नहीं रखते इसलिए जो हीरे–मोती सदृश अमूल्य शुद्ध सात्विक सज्जनता को प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें ही हम परम धाम में पहुंचाते हैं।

म्हे खोजी थापण होजी नाही, खोज लहां धुर खोजूं।

हम खोजी हैं अर्थात् जिन जीवों के कर्मजाल समाप्त हो चुके हैं वे लोग अब परम तत्व के लिए बिल्कुल तैयार हैं, उन्हें केवल सहारे की जरूरत है। ऐसे जीवों की हम खोज करेंगे तथा चुन–चुन कर उन्हें परम सत्ता से साक्षात्कार करवाएंगे। हम होजी नहीं हैं, अर्थात् अज्ञानी या नासमझ नहीं हैं। एक–एक कार्य बड़ी शालीनता से किया जाएगा जो सदा के लिए सद्मार्ग स्थिर हो जाएगा। सृष्टि के प्रारम्भिक काल से लेकर अब तक जितने भी जीव बिछुड़ गए हैं उन्हें प्रह्लाद जी के कथनानुसार वापिस खोज करके सुख शांति प्रदान कराऊंगा। इसलिए मेरा यहां पर आगमन हुआ है।

अल्लाह अलेख अडाल अजोनी स्वयंभू,
जिहिं का किसा विनाणी।

उस परम तत्व की प्राप्ति जीव करते हैं, वह अल्लाह, माया रहित, शब्द लेखन शक्ति से अग्राह्य उत्पत्ति रहित, मूल स्वरूप, जो स्वयं अपने आप में ही स्थित है, उसका विनाश कैसे हो सकता है? इसलिए इस सिद्धान्त से विपरीत जो जन्मा हो, लेखनीय हो, डाल रूप हो, जो उत्पत्तिशील हो उसका ही विनाश संभव है। इसलिए उस नित्य आनन्द स्वरूप परमात्मा को प्राप्त करके जीव भी नित्य आनन्द रूप ही हो जाता है।

म्हे सरै न बैठा सीख न पूछी, निरत सुरत सब जाणी।

जब उधरण ने पूछा कि हे देव! यह शिक्षा आपने कौन सी पाठशाला में प्राप्त की, क्योंकि ऐसी विद्या तो हम भी सीखना चाहते हैं। तब जम्भेश्वरजी ने कहा कि 'मैंने यह विद्या किसी पाठशाला में बैठकर नहीं सीखी।' तो फिर कैसे जान गए? हे उधरण! मैंने इसी प्रकृति की पाठशाला में बैठकर सुरति–वृति को निरति यानि एकाग्र करके सभी कुछ जान लिया। पाठशाला में बैठकर तो सभी कुछ नहीं जाना जा सकता किन्तु उस सत्ता परमेश्वर के साथ वृति को मिला लेने से सभी कुछ जाना जा सकता है, क्योंकि वह परम तत्व व्यापक होने से वृति एकाग्र कर्ता जीव भी व्यापकत्व को प्राप्त हो जाता है और सभी कुछ जान लेता है। इसलिए आप भी मन–वृति को एकाग्र कीजिए और सभी कुछ जानिए।

उत्पति हिन्दू जरणा जोगी, किरिया ब्राह्मण,
दिल दरवेसां, उनमुन मुल्ला, अकल मिसलमानी।

उत्पत्ति से तो सभी हिन्दू हैं, क्योंकि जितने भी धर्म सम्प्रदाय चले हैं, उनका तो कोई न कोई समय निश्चित है। किन्तु हिन्दू आदि अनादि हैं, कोई भी संवत् निश्चित नहीं है तथा मानवता जिसे हम कहते हैं,

वह पूर्णतया हिन्दू में ही सार्थक होती है, इसलिए उत्पन्न होता हुआ बालक हिन्दू ही होता है, बाद में उसको संस्कारों द्वारा मुसलमान, इसाई आदि बनाया जाता है। जिसके अन्दर जरणा अर्थात् सहनशीलता है वही योगी है। जिस प्राणी के अन्दर क्रिया, आचार-विचार, रहन-सहन, पवित्र तथा शुद्ध हैं वही ब्राह्मण है। जिस मानव का अंत:करण शुद्ध, पवित्र, विशाल, राग द्वेष से रहित है वही दरवेश है। जिस मनुष्य ने मानसिक वृतियों को संसार से हटाकर आत्मस्थ कर लिया है वही मुल्ला है तथा जो इस संसार में बुद्धि द्वारा सोच-विचार के कार्य करता है वही मुसलमान हो सकता है क्योंकि मुसलमान पंथ संस्थापक ने अकलहीनों को अकल दी थी जिससे यह पंथ स्थापित हुआ था। कोई भी जाति विशेष इन विशिष्ट कर्मों द्वारा ही निर्मित होती है। कर्महीन होकर केवल जन्मना जाति से कुछ भी लाभ नहीं है। यह तो मात्र पाखण्ड ही होगा।

साभार- जंभसार

साखी

नरसिंह नर मुलतान, सतयुग में साकों कियो।
मारयो दैत दिवान, प्रह्लाद भक्त गोदी लियो।
प्रह्लाद भक्त गोदी लियो नै, सिर पर दोनू हाथ।
शिव ब्रह्मा आया सही नै, सुर तेतीसूं साथ।
लक्ष्मी हूं लारे लुके तूं, मांग वचन प्रह्लाद।
बाड़ै हुंता बीछड़या नै, ते आण मिलावो साध।
कर जोड़या ऐसे कही ॥1॥

कह हरि महाराज, दूर पड़ै टोली टलै।
सांसो मत कर साध, चहुं पहरा चोकस मिलै।
चहुं पहरा चोकस मिलै नै, चार जांमे जुग चार।
हरिचंद पांडू अंस तब, नन्द लोहट अवतार।
पांच सात नव करोड़ बारां, बहुरी मिलेगे आण।
नहतंती नरलोक में, आवै जंभ सुजाण।
दु:ख मेटण मोटो दई ॥2॥

तारयो जिण प्रह्लाद, हिरणाकुस मारयो हरि।
असुरा लागी आंच, देख दुनी सारी डरी।
देख दुनीं सारी डरी नै, गहया धर्म उणतीस।
अग्नि की पूजा करो, आय निवावो सीस।
असुर बुध अलगी भई, करे शोच सिनांन।
पाहल लै प्रसण भया, अरू मानै गुरु की आण।
दिल की दुबध्यां सब गई ॥3॥

जब का बिछड़या जीव, बिन खोजी पावै नहीं।
गया समंदरा तीर, बिन लाया आवै नहीं।
बिन लाया आवै नहीं नै, कलयुग बहै करूर।
भक्ति हमारी कूण करे, यूं जाण्यो विष्णु जरूर।
महा विष्णु को तप कियो, निरंजन निज देश।
प्रह्लाद कवल के कारणे, आये जंभ नरेश।
घट घट व्यापक जंभ वहीं ॥4॥

लोहट है नन्दराय, जसोदा हांसा माई।
मरूस्थल है वृज भोम, पीपासर वृज है सही।
पीपासर वृज है सही नै, वचन के प्रति पाल।
कृष्ण कवल के कारणै, गुरु जंभ लियो अवतार।
सतलोक को छोड़ के, गुरु किया भगवा भेस।
जेठ वदि नौमी दिन, गुरु कियो नंद उपदेश।
साहब सतगुरु है सही ॥5॥

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश

इस साखी के रचयिता सुप्रसिद्ध जाम्भाणी कवि साहबराम जी राहड़ हैं।

चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई महासभा के संरक्षक मनोनीत

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की एक बैठक महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामनारायण जी बिश्नोई पूर्व उपाध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा की अध्यक्षता में 1 फरवरी, 2012 को गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन, नई दिल्ली में हुई। इस बैठक में चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, सांसद हिसार; श्री जसवंत सिंह बिश्नोई, पूर्व सांसद; श्रीमती विजयलक्ष्मी बिश्नोई, पूर्व विधायिका; श्री दूड़ाराम बिश्नोई, पूर्व संसदीय सचिव; श्री लादूराम जी बिश्नोई, पूर्व सलाहकार, मुख्यमंत्री राजस्थान; श्री ताराचंद खिचड़, वरिष्ठ उपाध्यक्ष महासभा व प्रधान बिश्नोई सभा फतेहाबाद; प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार; श्री रामसिंह पंवार महासचिव, महासभा सहित महासभा के पदाधिकारियों व माननीय सदस्यों ने भाग लिया। सभी उपस्थितजनों ने सर्वसम्मति से हिसार के लोकप्रिय सांसद चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई को अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा का संरक्षक मनोनीत किया।

ध्यातव्य है कि इससे पहले 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी महासभा के संरक्षक थे। उनके स्वर्गवास (3 जून, 2011) के बाद से यह पद रिक्त था। चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई न केवल चौ. भजनलाल जी के राजनीतिक उत्तराधिकारी हैं अपितु उनके गुणों के भी प्रतिनधि हैं। 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी के निधन से समाज को जो अपूर्णीय क्षति हुई है, उसकी पूर्ति की आशा समाज चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई से करता है। चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई चौ. भजनलाल जी द्वारा स्थापित हरियाणा जनहित कांग्रेस (बी.एल.) के अध्यक्ष हैं। श्री बिश्नोई ने सन् 1998 में आदमपुर विधानसभा का उपचुनाव जीतकर चौ. भजनलाल जी के नेतृत्व में राजनीति में पदार्पण किया था। आप 2004 में भिवानी संसदीय क्षेत्र से चुनाव जीतकर प्रथम बार सांसद बने थे। पुन: 2009 में आदमपुर से विधायक चुने गये। श्री बिश्नोई 2011 में हिसार लोकसभा का उपचुनाव जीतकर पूरे देश के चर्चित नेता बन चुके हैं।

चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई एक कुशल राजनेता होने के साथ-साथ समर्पित समाजसेवी भी हैं। आप महासभा के अध्यक्ष के रूप में समाज की उल्लेखनीय सेवा कर चुके हैं। महासभा अध्यक्ष रहते हुए आपने निजी व्यय से मुकाम से 29-29 कि.मी. दूर तक संकेत पत्थर लगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। श्री बिश्नोई दूरदृष्टि रखने वाले साहसी राजनेता हैं। नि:संदेह चौ. भजनलाल जी के जाने से समाज में एक शिथिलता उत्पन्न हुई है। समाज को पूर्ण विश्वास है कि चौ. कुलदीप सिंह तन-मन-धन से समाज की सेवा करते हुए इस शिथिलता को दूर करेंगे। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व सम्पूर्ण समाज की ओर से श्री बिश्नोई को महासभा का संरक्षक मनोनीत होने पर हार्दिक बधाई व गुरु महाराज से प्रार्थना है कि आप जीवन के हर क्षेत्र में चहुंमुखी उन्नति करते रहें और समाज की आशाओं पर खरे उतरें।

❐ **सुभाष देहडू**, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार

बिश्नोई पंथ एवं होली

प्राचीन परम्परा से बिश्नोई पन्थ को प्रह्लाद पंथ के नाम से पुकारा जाता है। पुराणों की आख्यान कथाओं में प्रह्लाद भक्त का नाम बड़े ही समादर से लिया गया है। किसी भी पन्थ का मूल उत्सर्ग नींव किसी विशेष व्यक्ति से जुड़ा हुआ होना अपने आप में महत्त्व रखता है। हमारे बिश्नोई पन्थ के पूर्व आदि पुरुष भक्त प्रह्लाद हुए हैं जो भारतीय वाङ्मय में अत्यधिक प्रचलित है। प्रह्लाद से ही होली के त्योहार का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है इसलिए होली एवं बिश्नोई पन्थ का विशेष सम्बन्ध है। हमारे पूर्व वृद्ध पुरुष तो इस बात को अच्छी प्रकार से जानते थे और होली का पर्व बिश्नोई पन्थ के मुख्य त्यौहार के रूप में मनाते आए हैं किन्तु आधुनिक युग में इस महत्त्व को भुलाया जा रहा है। होली तो अन्य लोगों की देखा देखी मनाते हैं किन्तु बिश्नोइयों की होली कुछ विशिष्ट है इस बात से आज की युवा पीढ़ी अवगत नहीं है। इस लेख द्वारा कुछ विशेष बातें मैं आपके समक्ष रखने का प्रयास कर रहा हूं।

गुरु जाम्भोजी द्वारा उच्चारण की गयी सबदवाणी हमारे लिए मूल आधार है जो बातें अन्य वेद पुराणों आदि में नहीं कही गयी है वे बातें सबदवाणी में मिलेगी। इसलिए कहा है- **'मेरा उपख्यान वेदूं कण तंत भेदूं, शास्त्र पुस्तकें लिखणा न जाई'** यहां पर सबदवाणी में प्रह्लाद के बारे में गुरु जम्भेश्वर जी ने बतलाया है कि **'पांच करोड़ प्रह्लादो ले उतरियो, जिण खरतर करी कमाई, 'म्हे बाचा कीवीं प्रह्लादे सू, सू चेलो गुरु लाजै, 'प्रह्लाद सूं बाचा कीवीं आयो बारै काजै'** इत्यादि अनेक स्थलों एवं प्रसंगों पर सबदवाणी में प्रह्लाद के बारे में बताया है और प्रह्लाद के वचनों को पूरा करने के लिए गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि मैं आया हूं। प्रह्लाद को क्या वचन दिया था और उसको पूर्ण किस प्रकार से किया था, यह विचारणीय है। इस विचार को समझने के लिए हमें पुराणों तथा बिश्नोई संत कवि केशोजी एवं साहबराम के साहित्य का सहारा लेना होगा।

जाम्भोजी की शिष्य परंपरा में केशोजी ने प्रह्लाद चरित्र नामक काव्य लिखा है जो राजस्थानी भाषा का सर्वश्रेष्ठ काव्य हो सकता है। ऐसा कहा जाता है कि संस्कृत काव्य में 'उपमा कालिदास्य' उपमा अलंकार में कालीदास के बराबर अन्य नहीं है। उसी प्रकार से मैं कह सकता हूं कि राजस्थानी जाम्भाणी साहित्य में केशोजी कृत 'प्रह्लाद चरित्र' में उपमा के विषय में अन्य कोई कवि नहीं है जो उनकी बराबरी कर सके। इस समय उपलब्ध हस्तलिखित साहित्य में गुरु जाम्भोजी की सबदवाणी के बाद केशोजी द्वारा रचित प्रह्लाद चरित्र ही है जिनकी बहुत सारी प्रतिलिपियां उपलब्ध हैं जिसका प्रकाशन मैंने करवाया था, जो इस समय उपलब्ध है केशोजी के बाद 'ऊदोजी अडिग' ने भी प्रह्लाद चरित्र लिखा था वह भी प्रकाशित हुआ है। इसी परंपरा में साहबराम जी राहड़ ने भी जम्भसार में विस्तार से प्रह्लाद चरित्र लिखा है वह भी उपलब्ध है तथा साहबराम जी ने प्रह्लाद के बारे में दो साखियां भी लिखी हैं जो होली के शुभ अवसर पर तथा जागरण आदि में गाई जाती हैं।

सतयुग में हिरण्यकश्यप एक राक्षस रूप में अदिति का पुत्र था। हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद था। राक्षस कुल में जन्म लेने वाला बालक भी संत संगति से अच्छे संस्कारों के कारण परम भक्त हुआ है और अपने पिता के अन्याय का विरोध किया। पिता ने अपने पुत्र को गुरु के यहां भेजा था राक्षसी विद्या सिखाने के लिए किन्तु प्रह्लाद दैवी विद्या से पारंगत हुआ। पिता पुत्र का स्वभाव गुण धर्म सर्वथा विरोधी था। जैसा बीज होगा धरती में डालने से जल से सिंचाई आदि करने से तो वैसा ही फल देगा। विपरीत फल कैसे देगा। कहा भी है- 'यांके कर्म इसायो तो नीरे दोष किसायो' हिरण्यकश्यप राक्षस बनाना चाहता था किन्तु वह बन गया देवता। इस प्रकार के अपने विरोधी को पनपता

देखकर उस राक्षस पिता ने प्रह्लाद को अनेक कष्टों से दुखी करने तथा मारने के उपाय किए किन्तु सभी निष्फल ही चले गये। पुत्र के प्रति ऐसा अन्याय पिता को नहीं करना चाहिए था किन्तु वह राक्षस था, अहंकारी पिता हो तो वह भी राक्षस ही हो जाता है। जिसकी परमात्मा स्वयं रक्षा करें उन्हें मारने वाला भी कोई नहीं है। इस महान परीक्षा में प्रह्लाद उत्तीर्ण हुआ था। अनेकों उपाय विफल हो गए थे।

एक दिन हिरण्यकश्यप की बहन होलिका आ गयी और अपने प्रिय भाई को दु:खी देखकर कहने लगी मेरे प्यारे भाई! आप इतने दु:खी क्यों हैं। वह राक्षस भाई कहने लगा- बहन मैं क्या बताऊं मेरा पुत्र प्रह्लाद तुम्हारा प्रिय भतीजा यह मेरे से विरुद्ध चलता है। मैंने इसको मारने के अनेक उपाय किए हैं किन्तु सभी व्यर्थ ही चले गए। मुझे तो ऐसा लगता है कि यह मेरे को ही कहीं मारकर मेरा राज्य न छीन ले, अब मैं क्या करूं? यह न तो शास्त्र से मरता है, न ही जल में डूबता है और न ही धरती में दबता है। कोई उपाय मुझे सूझता ही नहीं है। अब तू ही बता इसे मारे बिना मुझे नींद नहीं आती है। बिन खाना-पीना, नींद के मैं कितने दिन जी सकूंगा। क्या पता इस समय इसके अनुयायी भी बहुत हो गए हैं। ये कहीं मुझे ही न मार डाले और प्रह्लाद को राजा ही न बना दें।

होलिका कहने लगी- भैया, 'काज पराया सींवला, जहां दुखे तहां पीड़'

ये लोग तुम्हारे नौकर चाकर ठीक से तुम्हारी आज्ञा का पालन ही नहीं करते हैं। यदि इन उपायों द्वारा मारना चाहे तो क्यों नहीं मरेगा? भैया! क्या तुमने इसे अग्नि में भी जलाने का प्रयत्न किया है? राक्षस कहने लगा- वह तो नहीं किया है किन्तु मैं कर भी क्या सकता हूं? कैसे अग्नि में जलाया जाए। होलिका कहने लगी- मैं इस कार्य को अच्छी तरह से कर सकती हूं। मुझे महादेव जी का वरदान है कि मैं तो अग्नि में जलूंगी नहीं। मेरे पास ऐसा ही शीतल ओढ़ना है। मैं ओढ़कर बैठ जाऊंगी और तुम्हारे पुत्र को मैं गोदी में लेकर बैठूंगी और जला दूंगी। मैं सकुशल बच जाऊंगी। तुम जल्दी उपाय करो और रखवाले चारों तरफ खड़ा कर दो ताकि बचकर निकल न जाए।

ऐसा ही किया गया। लकड़ियां मंगवाकर होली बना दी। होलिका अपने भतीजे को गोदी में लेकर बैठ गयी। चारों ओर हा-हाकार मच गया है। इधर प्रह्लाद की माता उमा ने अपने पुत्र की मृत्यु की वार्ता सुनकर विलाप किया। इसका चित्रण केशोजी द्वारा वर्णन किया गया है। पढ़िए-

'धवला'

उमा मन अणराय, देखी न दीन्हौ दानड़ो।
पुत कहां पहलाद, नजरि न आव नान्हड़ो।
नजरि न आव नान्हड़ो, नै खेलतो दरबारी।
पुत न ग्रह गोद लेती, उजामी उंणहारि।
कै दीयों हुल रावणी, पुत विण्य उरलाय।
आंगण घरि आव बाल, मांय कर अणराय॥489॥

दुहा-

रीण पड़ी आयो नहीं, बिछड़ कियो बिजोग।
असरां दुरि आणंद हुवौ, साधा र मान्य सोग॥490॥

प्रात:काल हुआ बुआ होलिका तो लौटकर आयी नहीं। राक्षस लोग देखते ही रहे किन्तु भक्त प्रह्लाद प्रात:कालीन बेला में खेलता हुआ राक्षसों ने देखा कि आ रहा है। उन्हें इस बात का आश्चर्य हुआ कि यह क्या हुआ? यह विपरीत कैसे हो गया। जिसे जलना था वह तो लौट कर आ रहा है किन्तु जिसे बचना था वह होलिका लौटकर नहीं आयी। क्या हुआ यह तो राक्षस नहीं जानते किन्तु पवन देवता ने गड़बड़ कर दिया। जो ओढ़ना होलिका ने ओढ़ रखा था वह पलट कर प्रह्लाद को ओढ़ा दिया और होलिका को अग्नि ने जला डाला था। महादेव जी का वरदान तो ठीक ही हुआ था। उसी दिन से होली का यह त्यौहार प्रारम्भ हुआ था। किन्तु

होली का त्यौहार मनाने का तरीका भिन्न-भिन्न हो गया। जो प्रह्लाद के अनुयायी भक्त थे उन्होंने तो प्रात:कालीन बेला में प्रह्लाद के आगमन पर खुशियां मनाई, हवन किया। देवताओं को धन्यवाद दिया किन्तु हिरण्यकश्यप के अनुयायी राक्षस लोग थे उन्होंने एक दूसरे पर कीचड़ फेंक गालियां दी और आपस में ही भिड़ गये। एक दूसरे पर दोषारोपण करने लगे। इस समय भी राक्षस वृत्ति के लोग होली का ऐसा ही भद्दा प्रदर्शन करते हैं किन्तु प्रह्लाद पंथ के पथिक बिश्नोई खुशियां मनाते हैं। आनन्द मनाते हैं, मिठाइयां बनाते हैं और एक दूसरे से प्रेम से मिलते हैं तथा आपसी वैरभाव, बुराइयां होली में ही जला डालते हैं। होलिका बुराई की प्रतीक है उसे जला डालते हैं किन्तु राक्षस लोग इसके विपीत होलिका को जिंदा रखते हैं तथा रोना, पीटना, चिल्लाना आदि अशुभ सूचक कार्य करते हैं।

होली के दिन से पूर्व रात्रि में जब होलिका प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठती है तब प्रह्लाद पंथी शोक मनाते हैं। यह परंपरा अब भी बिश्नोइयों में मौजूद है। सूर्य छिपने से पूर्व ही शोक रूप में खिचड़ा आदि भोजन बनाके खाते हैं। वह शोक का प्रतीक है और सुबह ही खुशी मनाते हैं तो हवन पाहल ग्रहण करते हैं। होली के प्रात:कालीन शुभ बेला में प्रह्लाद के वापिस आगमन पर प्रह्लाद ने हवन करके कलश की स्थापना करके **'पांच करोड़ा के मुखी प्रह्लाद ने कलश थाप्या, वै कलश धर्म हुआ सो इस कलश हुइयो'** पाहल बनाया और बिष्णु पंथ की स्थापना की थी। इसलिए आज भी होली के दिन बिश्नोई पंथ के मूल दिवस के रूप में मनाते हैं। वह प्रह्लाद पंथ जो होली के दिन स्थापित हुआ था वही आगे चलकर त्रेता युग में हरिश्चन्द्र ने पुन: स्थापित किया और सात करोड़ के मुखिया बने तथा द्वापर युग में युधिष्ठिर ने पुन: उसी पंथ को स्थापित किया और नौ करोड़ का उद्धार किया। आगे कलयुग में विष्णु अवतसार गुरु जाम्भोजी ने उसी प्रह्लाद पंथ को पुन: जीवित किया था और कलयुग में बारह करोड़ों के मुखी बने और उनके उद्धार का वचन पूर्ण किया था और कहा कि जो भी इस सतपंथ का अनुयायी होगा उसका उद्धार अवश्य ही होगा। अब हम भी उसी प्रह्लाद पंथ के अनुयायी बिश्नोई हैं। हम भी उसी पंथ पर चलकर पहुंच जाएंगे, यदि गुरु के बताए हुए पंथ मार्ग पर चलेंगे तो।

गुरु जाम्भोजी ने नौ अवतारों को मान्यता दी है, उनके एक नरसिंह अवतार हुआ है। वह केवल प्रह्लाद भक्त की रक्षा करने और हिरण्यकश्यप को मारने के लिए ही हुआ है। इसलिए कहा है- **'प्रह्लाद सूं वाचा कीवी, आयो बारा काजै'**। अर्थात् प्रह्लाद को मैंने ही नरसिंह रूप धारण करके वचन दिया था। उस वचन को पूर्ण करने के लिए गुरु महाराज कहते हैं कि मैं यहां कलयुग में सम्भराथल पर हरि कंकेहड़ी के नीचे आसन लगा कर बैठा हूं क्योंकि वे प्रह्लाद के बिछुड़े हुए जीव यहीं इसी मरूदेश में आए हुए हैं उन्हें मैं जानता हूं उनकी खोज करने के लिए आया हूं। **'म्हे खोजी थापण होजी नाही, खोज लहां धुर खोजूं' 'बारां थाप घणां न ठाहर'** जब मेरा कार्य पूर्ण हो जाएगा तो मैं अधिक दिनों तक नहीं रूकूंगा क्योंकि एक पथ में बताकर जाऊंगा उसी पथ के पथिक बनते जाएंगे और उनका उद्धार होता जाएगा। गुरु देव ने आश्वासन दिया है कि:-

'गुरु आसन सम्भराथले' 'कहै सतगुरु भूल मत जाइयो पड़ोला अभै दोजखे' और भी कहा था कि आप लोग यदि मेरे से वार्ता करना चाहते हैं तो सबदवाणी आपके पास रहेगी और यदि दर्शन करना चाहते हैं तो हवन-ज्योति में मेरा दर्शन करे। इन्हीं दो परंपराओं से जुड़े रहोगे तो आप लोग पंथ से विचलित नहीं होंगे और अपना जीवन सफल कर सकोगे। यह सभी वार्ता वि.सं. 1542 में कार्तिक बदी अष्टमी के दिन पंथ की स्थापना करते हुए कही थी और उन्नतीस नियमों की संहिता प्रदान की थी जो पंथ पर चलने में परम सहयोगी है। यही होली का पर्व हमें बताता है और बिश्नोई पंथ पर चलने की प्रेरणा देता है।

स्वामी कृष्णानन्द आचार्य
बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड

पहलादा सूं वाचा कीवी आयो बारा काजै

गुरु जाम्भोजी की 'सबदवाणी' की उक्त पंक्ति में एक लोकमंगलकारी कर्म निहीत है। भारतीय संस्कृति में एक अवधारणा आदिकाल (सतयुग) से ही परम्परागत रूप से आज तक चली आ रही है कि सतयुग में प्रह्लाद भक्त के पिता हिरण्यकश्यप को, त्रेता युग में रावण व कुम्भकरण इत्यादि राक्षसों को, द्वापर में कंस व शिशुपाल आदि दुष्टों को मारने हेतु परमपिता परमेश्वर को स्वयं नरतन धारण करके पृथ्वी पर क्रमशः नरसिंह, राम व कृष्ण रूप में आना पड़ा। ईश्वर ने हर युग में अवतरित होकर दुष्टों का संहार किया और अस्त-व्यस्त हुई सामाजिक व्यवस्था को पुनः नए रूप में स्थापित कर सज्जनों, संतों व धर्माचारी व्यक्तियों को संबल प्रदान किया। द्वापर में भगवान श्री कृष्णा जी ने भी गीता में 'यदा-यदा हि धर्मस्य' कहकर इसकी पुष्टि की है। यह बात निःसंदेह भारतीय संस्कृति के इतिहास को स्थायित्व प्रदान करती है। परन्तु इसी के साथ एक दूसरी बात कि 'जिन दुष्टों व राक्षसों का संहार राम, कृष्ण, नरसिंह आदि अवतारों द्वारा किया गया उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई' पर यदि हम भविष्य को लेकर विचार करें तो एक ऐसी स्थिति समाज में पैदा हो सकती है, जिस पर जाम्भो के अतिरिक्त शायद ही किसी ने विचार किया हो। सतयुग में प्रह्लाद द्वारा अपने पिता हिरण्यकश्यप के लिए भगवान नृसिंह से यह प्रार्थना करना कि मेरे पिता को मोक्ष प्राप्ति हो जाए, एक सज्जन एवं भक्त पुत्र होने के नाते भले ही युक्ति संगत बात हो सकती है परन्तु त्रेता में तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस की निम्न चौपाई जिनमें रावण द्वारा उक्त धारणा को पुष्ट किया गया है कि-

'खर-दूषण मोहि सम बलवन्ता। तिन्हिह को मारहि बिनु भगवन्ता॥
सुर रंजन, भंजन महि भारा, जो भगवन्त लीन्ह अवतारा॥
तो मैं जाय बैर हठ करिहौं, प्रभु सर प्रान तजे भव तरेहौं॥
होहई भजन न तामस देहा। मन क्रम वचन मन्ता दृढ़ ऐहा॥

कहना एक शुभ संकेत दे रहा है जरा सोचिए भवसागर पार होकर स्वर्ग या मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा भारतीय संस्कृति में जन्मे व पोषित किस मानव के हृदय में नहीं रहती। मानव इसी की प्राप्ति के लिए युगों-युगों से प्रयत्नरत है। साधु-संत, गृहस्थी, बाल, वृद्ध, युवा हर वर्ग का व्यक्ति नाना विधियों द्वारा जीवन को इसी अभिलाषा संबल पर यापन करता है। उक्त धारणा जो रावण ने मन में धारण करके राम से वैर भाव रखकर मोक्ष प्राप्ति हेतु स्थापित की यदि इस भावना से प्रेरित होकर प्रत्येक मानव लघु मार्ग द्वारा मोक्ष प्राप्ति हेतु वैर भाव से सम्बन्ध स्थापित कर प्रयत्नरत हो जाए तो समाज में कैसा वातावरण उत्पन्न हो जाएगा? क्योंकि इस लघु मार्ग (शार्टकट) से यदि मोक्ष प्राप्ति संभव है तो फिर भजन, जाप, स्मरण, तीर्थाटन, व्रत, धर्माचार आदि कृत्यों की क्या आवश्यकता है? क्योंकि शास्त्रोक्त आधार पर वर्षों तक प्रयत्न करने पर इसकी प्राप्ति के विषय में संशय बना रहता है। तुलसी ही एक स्थान पर कहते हैं कि **'जन्म-जन्म मुनि जतन कराहि, अन्त राम कह पावत नांहि॥'** उनका यह कथन इसी ओर संकेत कर रहा है।

उक्त धारणा से सारांशतः यही स्पष्ट होता है कि यदि दुष्कर्म, अनाचार, अत्याचार करते हुए भगवान के हाथों मरकर स्वर्ग या मोक्ष मिलता है तो फिर भजन, जप-तप, सदाचार, सदकर्मों के करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि मोक्ष प्राप्ति की यह लम्बी प्रक्रिया है और वैर भाव प्रभु से रखते हुए अनाचार, अन्याय, दुष्कर्म युक्त जीवन जीने से भी स्वर्ग या मोक्ष प्राप्ति शीघ्र ही संभव है।

गुरु जाम्भो जी ने संभवतः इसी अवधारणा के

खण्डन हेतु एक नई अवधारणा की स्थापना की जिसके लिए प्रथमत: उन्होंने अपने बिश्नोई पंथ को सतयुग में भक्त प्रह्लाद से सम्बद्ध करके एक नवीन घटनाक्रम को पौराणिक आधार पर व्यक्त करते हुए कहा कि जब भगवान नृसिंह ने हिरण्यकश्यप का वध किया तब प्रह्लाद ने भगवान नृसिंह से उस काल में 33 कोटि अपने अनुयायियों को भवसागर से पार करके मोक्ष प्रदान करने की प्रार्थना की। तब भगवान नृसिंह ने सतयुग में हिरण्यकश्यप के हाथों मारे गये 5 करोड़ व्यक्तियों को मोक्ष प्रदान करने का वचन देकर शेष 28 करोड़ का क्रमश: 7 करोड़ त्रेता में हरिश्चन्द्र के साथ तथा 9 करोड़ को महाराज युधिष्ठिर के साथ तथा 12 करोड़ को स्वयं कलयुग में जम्भावतार लेकर मोक्ष प्रदान करने का वचन दिया तथा इसकी पुष्टि जाम्भोजी ने 'प्रहलादासूं वाचा कीवी आयो वारा काजै' कहकर की है।

गुरु जाम्भो जी के उक्त प्रकरण के संदर्भ में हमें और गहराई में जाना होगा तथा अन्वेषणात्मक दृष्टि से देखना होगा कि विगत तीन युगों में नृसिंह, राम, कृष्ण आदि मुख्य अवतारों की क्या भूमिका रही। उक्त अवतारों का आविर्भाव जब-जब संसार में हुआ उस समय की पृष्टभूमि को देखा जाए तो हम यही देखते हैं कि जब-जब धरा पर मानव अपनी मूल प्रवृति से हटकर स्वेच्छाचारी व निरंकुश होकर सुपथगामी बना, उसने अनाचार अत्याचार अन्याय की राह पकड़कर सुगठित, सुशासित, समाज को विचलित किया तब-तब पृथ्वी पर उक्त अवतारों ने साम, दाम, दण्ड, भेद द्वारा दुर्जनों व राक्षसों का संहार करके समाज को पुन: नया जीवन प्रदान किया। भगवान कृष्ण ने गीता में इस कथन की पुष्टि 'परित्राणाय साधुनाम् विनाशय च दुष्कृताम्' कहकर की है। सारांशत: यह बात सामने आती है कि भारतीय संस्कृति के इतिहास में अवतारों ने अवतरित होकर केवल और केवल समाजिक परिवेश व परिदृश्य को बदल कर जन साधारण व सज्जनों को मानवता की राह पर चलने का पथ सुगम किया है। इनकी सबकी भूमिका समाज सुधारक की सी रही है। सामाजिक नियंत्रण करके सुसमाज की स्थापना ही अवतारों का उद्देश्य रहा है। स्वर्ग या मोक्ष प्राप्ति में या किसी भी पारलौकिक उपलब्धि हेतु उनकी कोई भूमिका नहीं है। एक स्थल पर सबदवाणी में गुरु जी ने कहा भी है कि '**अईया लो अपरम्पार वाणी म्हे जपा न जाया जीऊं, नव अवतार नवो नारायण तेपण रूप हमारा थीयूं**'। अर्थात् मैं एक अपरम्पारगत (पुरानी परम्परा से हटते हुए) कहता हूं कि मैं किसी जन्मे हुए प्राणी का जाप या स्मरण नहीं करता यहां तक कि भारत भूमि पर पूर्व में अवतरित नव अवतार (जिनकी पूजा प्रार्थना, जप, स्मरण, समाज में मोक्ष या स्वर्ग प्राप्ति की लालसा से लोग करते हैं) केवल श्रद्धा या नमन के योग्य ही है क्योंकि उन्होंने भी जन्म लिया है शरीर धारण किया वे भी केवल हमारी तरह ही हैं उनका जाप या उनकी आराधना स्वर्ग या मोक्ष (जो भारतीय जनमानस का सर्वोपरि लक्ष्य है) नहीं प्रदान कर सकता उसके लिए तो कुछ और ही करना पड़ेगा और इसके लिए जीवन को किस परिवेश में ढालना, उसे बताने हेतु ही गुरु जाम्भो जी ने जो नई अवधारणा स्थापित की है इसको उसके द्वारा बताए गए सद्गुणों को जीवन में उतारना होगा तभी मोक्ष या स्वर्ग प्राप्ति का लक्ष्य संभव है अन्यथा नहीं।

स्वर्ग या मोक्ष लब्धी हेतु मुख्यत: भक्ति, सत्य, न्याय और धर्म ये चार स्तम्भ हैं। जिन्हें गुरु जाम्भो जी ने चारों युगों में प्रत्येक युग के आदर्श पुरुष के साथ जोड़कर संसार के समक्ष प्रस्तुत किए हैं। यथा- 5 करोड़ जीवों का उद्धार सतयुग के प्रह्लाद के सर्वोपरि गुण भक्ति के द्वारा। सात करोड़ का उद्धार त्रेता में महाराज हरिश्चन्द्र के सर्वोपरि गुण सत्य के द्वारा। नव करोड़ का उद्धार द्वापर में महाराज युधिष्ठिर के सर्वोपरि

गुण धर्मपालन के द्वारा तथा बारह करोड़ का उद्धार कलयुग में स्वयं के अपने गुण धर्मोपदेश व ज्ञान के द्वारा। इस संदर्भ में सबदवाणी के उदाहरण पुष्टि करते हैं:-

'पांच क्रोड़ी ले प्रह्लाद उतरियो जिन खरतर करी कमाई।
सात क्रोड़ी ले हरिश्चन्द्र उतरियो तारा दे रोहितास
हरिश्चन्द्र हाटो हाट बिकाई।
नव क्रोड़ी ले राव युधिष्ठिर उतरियो धन धन कुन्ती माई।
बारा क्रोड़ी समाह आयो, प्रह्लादा सूं कवलज थाई॥

अत: अन्त में कहा जा सकता है कि गुरु जाम्भो जी ने भारतीय संस्कृति के परम्परागत परिवेश के जीर्ण शीर्ण निरर्थक तथा थके मांदे व प्रमाद युक्त परिवेश का भेदन व खण्डन करके स्पष्ट रूप से मानव मात्र को यह संदेश इस परम्परा को स्थापित करके दिया है कि हे संसार के मानव यदि तू सच्चा होकर, धर्मनिष्ठ होकर, न्यायप्रिय होते हुए भक्ति भाव से परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है तो अवश्य ईश्वर की, मोक्ष की या स्वर्ग की प्राप्ति होगी न कि मनमाने ढंग से स्वेच्छाचारी बनकर। निसन्देह अवतारवाद के समानान्तर एक अद्‌भुत समन्वय के साथ चारों युगों हेतु प्रतिपादित गुरु जी की यह नूतन अवधारणा मानव समाज को पूजा प्रार्थना जप, तप से ढोंग दिखावे की ओर से रोकती हुई उक्त सद्‌गुणों को जीवन में उतारने का संकेत देने के साथ ही बिश्नोई पंथ की विचारधारा को स्थायित्व, शाश्वतता व सार्थकता प्रदान करके पुरानी व सारहीन होती सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए पुन: नवीन व सार्थक रूप में प्रतिपादन की सम्भावनाओं के द्वार मानव की आगत पीढ़ियों के लिए खोल रही है। होली के त्यौहार व भक्त प्रह्लाद का भी यही संदेश है।

- राजकुमार सेवक
रसूलपुर गूज्जर कांठ, मुरादाबाद (यूपी)

होली का संदेश

होली रंगों का त्योहार
वर्ण वर्ण रंग अनेक भांति से
करते भ्रातृत्व का प्रचार
होली रंगों का त्योहार

मानव में छिपी कटुता को
प्रेम में परिणित कर दो
अपने द्वेष भाव मिटा कर
भ्रातृत्व से भर दो
होली का संदेश यही है
हो सर्वत्र प्रेम विस्तार
होली रंगों का त्योहार

लाल, नीला, पीला, गुलाल
पुकार पुकार यह कहता
हम जैसे हिल मिल जाते हैं
मानव क्यों नहीं मिलता
अचेतन चेतन को समझाए
प्रकृति का अजब उपहार
होली रंगों का त्योहार

इतिहास साक्षी है बर्बरता से
कुछ ना हासिल होता है
जब वह अपना अहं त्यागे
तभी वह बुद्ध कहलाता है
इतिहास से सीखो मानव
करो प्रेम प्रचार
होली रंगों का त्योहार

होली आ गई हमें सिखाने
वैमनस्य का त्याग कराने
अब भी समय है छोड़ो मानव
अपने सभी विकार
होली रंगों का त्योहार

- सुशील कुमार, हिसार

प्रह्लादो रहियो शरण हमारी

आध्यात्मिक जगत का एक उज्ज्वल नक्षत्र है- भक्त प्रह्लाद। घोर विषम परिस्थितियों में भी जिसने अपने संकल्प का निर्वहन किया और सम्पूर्ण राजशक्ति के प्रतिकूल होने पर भी तैतीस करोड़ लोगों को भगवान के सन्मुख कर दिया। जिस राज्य में असुरों का सूर्य अस्त ही नहीं होता था। हिरण्यकश्यप के सिवाय उनका कोई आराध्य नहीं था। उस राज्य के घर-घर में हरिभक्त पैदा कर देने वाले प्रह्लाद का चरित्र वास्तव में बहुत अलौकिक है। प्रह्लाद के चरित्र को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका एक संत ने निभाई। नारद जी ने प्रह्लाद के गर्भावस्था के दौरान प्रह्लाद को लक्ष्य करके उनकी माँ को धर्म की ऐसी शिक्षा दी कि जिसके कारण ऐसा जीव पैदा हुआ, जिसने चारों युगों की तस्वीर ही बदल दी। गर्भवती माताओं को इस प्रसंग से प्रेरणा अवश्य लेनी चाहिए अब तो यह वैज्ञानिक भी सिद्ध कर रहे हैं कि गर्भवती महिलाओं के खान-पान ही नहीं अपितु उनके आचार-विचार और दिनचर्या का प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़ता है।

प्रह्लाद के चरित्र निर्माण में एक और भी अहम् सूत्र रहा है जिसकी आमतौर पर उपेक्षा कर दी जाती है, वह सूत्र है एक गरीब, अकिंचन पर भगवद् विश्वासी कुम्हारी, जिसने प्रह्लाद की भगवान के प्रति विश्वास को पुष्टि प्रदान की। एक वृहद् असुर साम्राज्य का राजकुमार अपने राज्य के बिल्कुल निम्न स्तर का जीवन यापन करने वालों से कैसे अपनेपन से मिलता है। आज के राजकुमारों को बिना किसी दिखावे के प्रह्लाद का अनुसरण करना चाहिए। पांच वर्ष की अवस्था आते-आते प्रह्लाद का निश्चय फौलादी बन चुका था और विद्यालय में प्रवेश करते ही गुरुजनों को इस बात का परिचय मिल गया। प्रह्लाद का आसुरी विद्या नहीं पढ़ने के स्पष्ट इंकार ने राज्य में भूचाल ला दिया जिसके कारण असुरराज के माथे पर चिंता की रेखाएं उभर आई। हिरण्यकश्यप के द्वारा प्रह्लाद को दिए कष्टों के बारे में हम सुनते हैं और पढ़ते हैं पर तात्कालीन व्यवस्था के विरुद्ध कैसे प्रह्लाद पल-पल लड़ते रहे, उन्हें भयंकर तूफान से किश्ती को निकाल कर ले जाना था, अपार प्रलोभन और भयानक भय भी उन्हें विचलित करने में कामयाब नहीं हो सका। वर्तमान समय में भी भ्रष्ट व्यवस्थाओं से लड़ने वालों के लिए प्रह्लाद प्रेरणा पुञ्ज है।

प्रह्लाद का प्रथम विद्रोह विद्यालय से शुरु होता है, वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था को बदल देना चाहते हैं जो केवल पेट भरने के ही उपाय बताए, जहां धर्म, नैतिकता और आध्यात्मिक शिक्षा न सिखाई जाए, वह प्रह्लाद के लिए किस काम की-

पारब्रह्म से हुई पिछाण, निर्भय होय भेंट निरवाण।
पाठ पढ़ूं प्रसन्न होय पीव, आवागवण न आवै जीव॥

(प्रह्लाद चरित्र...)

वर्तमान समय में तथाकथित धर्म निरपेक्षता का सवाल उठाकर स्कूली शिक्षा में भारतीय धर्मग्रन्थों और भक्त चरित्रों से विद्यार्थियों को परिचित न करवाना कहां तक उचित है। खासकर अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों को तो जीवन भर यह पता नहीं चलता कि उनका इतिहास, उनकी परम्पराएं कैसी थी और उनके आदर्श कैसे थे। जब तक विद्यालय की शिक्षाएं अपने गौरवमयी इतिहास और चरित्र निर्माण की शिक्षा नहीं दी जाएगी, उन्हें प्रह्लाद जैसे चरित्र नहीं 'पढ़ाए जाएंगे' तो भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने वाले हजार आन्दोलन होने पर भी व्यवस्था नहीं बदलेगी, क्षणिक आवेश में थोड़ा उफान आने के बाद ये आन्दोलन अपनी उपयोगिता खो बैठते हैं। मनुष्य को लौकिक शिक्षा देने के साथ-साथ

उसको जीव का परम लक्ष्य (भगवद् प्राप्ति) बतलाने वाली शिक्षा भी मिलनी चाहिए। यह जीव का मौलिक अधिकार है, उससे वंचित करने वाली शिक्षा व्यवस्था जीव के साथ अन्याय कर रही है।

भगवान के प्रति दृढ़ विश्वास, प्रेम, समर्पण भाव प्रह्लाद के सिवाय अन्यत्र मिलना अति दुर्लभ है। प्रह्लाद के पांच करोड़ अनुयायियों की हत्या उनकी आंखों के सामने कर जाती है और स्वयं को असहनीय जानलेवा यातनाएं दी जाती हैं। स्नेह करने वाली बुआ मौत बनकर खड़ी हो जाती है, पालनकर पिता तलवार लेकर सिर काटने को तत्पर है, फिर भी यह भक्त दृढ़ता के साथ कहता है कि भगवान है और वह सब जगह विद्यमान है-

परमेश्वर माता पिता, परमेश्वर परिवार।
कर्ता ने छोड़ के, लूकूं कहो किण लार॥

(प्रह्लाद चरित्र...410)

क्या आज के इन्सान, जो थोड़े से स्वार्थ या कष्ट निवारण के लिए शाम तक देवता बदल लेते हैं या अपनी इच्छापूर्ति के लिए अनेकों जगह भटकते हैं, प्रह्लाद को स्मरण करेंगे?

प्रह्लाद से जुड़ा होली का उत्सव भी आज विकृत हो गया है, इसे देखकर साधु पुरुषों को बहुत दु:ख होता है। उस समय जब होलिका ने प्रह्लाद को जलाने का प्रबंध किया था तो असुर समुदाय बहुत प्रसन्न हुआ और बड़े उत्साह से इस सारी व्यवस्था में लग गया जबकि सज्जन लोगों के लिए यह समाचार हृदय विदारक था, उनमें हाहाकार मच गया। केशो जी तो यहां तक कहते हैं कि-

प्रीत प्यार पशु पंखियां, डर मांहि अनोह छल अंखियां।
हिव रूखां बिरखां सोर हुवो, जीयां बिछोड़ि कीयो जुजवो॥

(प्रह्लाद चरित्र...475)

'प्रह्लाद के प्रति मानव ही नहीं पशु पक्षियों का भी बहुत अधिक स्नेह था। उनके हृदय भी दु:ख से भर गये, आंखों से आंसू बहने लगे। वृक्षों में भी ऐसा ही देखा गया कि बिना हवा के ही भयंकर ध्वनि वृक्षों से आने लगी। ऐसा लगता था मानों जीव का शरीर से वियोग हो रहा है।'

प्रह्लाद पंथी जीव आज भी होली के दिन दु:खी हो जाते हैं और शाम को भोजन नहीं करते, दूसरे दिन सुबह प्रह्लाद के जीवित होने का समाचार पाकर प्रसन्न होते हैं, हवन-पाहल करते हैं, मिष्ठान बनाते हैं, एक-दूसरे से मिलकर खुशियां व्यक्त करते हैं। जबकि असुरी मति के लोग होली के दिन नशा आदि करके होली जलाते हैं और दूसरे दिन प्रह्लाद के जीवित होने का समाचार सुनकर एक-दूसरे पर दोषारोपण करते हुए कीचड़ उछालते हैं, गाली-गलौच करते हैं, भद्दे एवं फूहड़ प्रदर्शन करते हैं। होली मुबारक तो कहते हैं, पर प्रह्लाद मुबारक कोई नहीं कहता।

'प्रेम बढ़यो प्रह्लाद को, पाहन से परमेश्वर काढ़यो'- प्रह्लाद तो प्रेम का प्रतीक है, उनके वियोग में चर-अचर प्रकृति भी व्याकुल हो जाती है, जड़ पदार्थ खम्भे से भगवान प्रकट हो जाते हैं, ऐसे प्रेम, करुणा और स्नेह के सागर प्रह्लाद के स्मरण दिवस होली को हमें प्रह्लाद की मर्यादा के अनुरूप ही मनाना चाहिए। प्रह्लाद के कठोर संकल्प और तप ने असुर साम्राज्य में रहते हुए भी एक ऐसे समाज का निर्माण किया जो चार युग बीतने के बाद भी विलक्षण हैं और अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। यह प्रह्लाद के प्रेम का परिणाम था कि भगवान का उन्हें ऐसा स्नेह प्राप्त हुआ तो वे अत्यधिक क्रोधित थे कि हिरण्यकश्यप का वध करने के बाद भी उनका क्रोध शान्त नहीं हो रहा था, उनकी आंखों से प्रलयंकारी लपटें निकल रही थी, उनके नथुनों से गर्म हवा के तूफान उठ रहे थे, उनकी जटाएं काल के समान लग रही थी, लक्ष्मी सहित तीनों लोकों में उनका ऐसा रूप किसी ने कभी नहीं देखा था, उस समय ऐसा लगा

रहा था कि अगर शीघ्र ही भगवान का यह क्रोध शांत नहीं हुआ तो प्रलय निश्चित है। पर कोई भी उनके पास जाकर उनका क्रोध शांत करवाने में समर्थ नहीं था। ऐसे समय में भी प्रह्लाद भगवान के पास हाथ जोड़े खड़े थे और प्रभु के ऐसे स्वरूप को प्रेम से एकटक निहार रहे थे, भगवान ने प्रह्लाद को अपने गोद में उठाया, छाती से लगाकर प्यार करने लगे। बहुत देर तक प्रेम से प्रह्लाद को अपनी छाती से लगाए रखने के बाद भगवान शान्त हुए। आज त्रिलोकीनाथ देखो प्रह्लाद से क्षमा मांग रहे हैं। अपनी देरी से आने के कारण खेद व्यक्त कर रहे हैं। भगवान के देरी करने का कारण यह तो नहीं था कि वे प्रह्लाद को भूल गए थे या किसी अन्य कार्य में व्यस्त हो गए थे, वे तो एक ऐसे समाज के निर्माण की भूमिका तैयार कर रहे थे जो चार युगों तक चलने वाला था। वरना भगवान की तरफ एक कदम चलने वाले की तरफ भगवान सौ कोस चलते हैं।

सिरजणहारो साध का, सदा संवारे काज।

माचिस की तीली जितनी अग्नि से किसी को बचाना मनुष्य के लिए सहज है उसी प्रकार प्रह्लाद को जलाने के लिए चार कोस बड़ा लकड़ियों का ढेर बनाकर आग लगाई गई पर दो कदम में दो लोक नापने वाले भगवान के लिए यह अग्नि तो माचिस की तीली जैसी ही थी।

कंकर हुं कीधी कली, मेल्य इम्रत महेसर।
गरद अबीर गुलाल, कीधी करतार ज केसरि।
पासी भइ परमाल, माल मील्य मुनियर मेहे।
सीला पलटी साम्य, फुल करि सुल्यज सोहे।
प्रह्लाद लाज राखी रूड़ा, रंग रस पुगी रली।
कर जोड़े आदेस करि, कंकर सुं कीधी कली।

(प्रह्लाद चरित्र... 426)

प्रह्लाद को जिन सीलाओं के नीचे दबाया जा रहा था, वे सीलाएं भी भगवान की अपार कृपा से फूल बन गई। जहर अमृत बन गया। ईंट और गारा, अबीर-गुलाल बन गया। गले में डली रस्सी, सुकोमल माला बन गई। प्रह्लाद की लाज रखने वाले स्वयं भगवान हैं।

प्रह्लादा सूं वाचा कीवी। आयो वारां काजै।
बारा में सूं एक घटै तो, सू चेलो गुरु लाजै।

(सबदवाणी 117)

नरसिंह रूप धर हिरणाकुस मारयो, प्रह्लादो रहियो शरण हमारी।

(सबदवाणी 98)

चौथे युग में भगवान स्वयं सम्भराथल पर बैठकर प्रह्लाद के प्रति कैसा स्नेह व्यक्त कर रहे है। प्रह्लाद को दिए वचन के कारण ही मैं यहां आया हूं अगर मैं यहां चूक करता हूं तो सुशिष्य प्रह्लाद के सामने मुझे लज्जित होना पड़ेगा। यहां भगवान प्रह्लाद को अपना सुयोग्य शिष्य बता रहे हैं और स्वयं को उनका ऋणी बता रहे हैं।

बिश्नोइयों के महापर्व होली को हम परमभक्त प्रह्लाद को याद करते हुए मनाए। रात्रि को सामूहिक रूप में बैठकर प्रह्लाद चरित्र और साखियों का गायन करें एवं सुबह हवन-पाहल करके सभी आपसी प्रेमभाव से पाहल ग्रहण करें एवं सुखद भविष्य एवं भक्तिभाव के लिए भगवान से प्रार्थना करे।

खङग लिया उण हाथ, पांच करोड़ प्रलय किया।
पकड़ लियो प्रह्लाद, संत सकल मन में डरिया।
संत सकल मन में डरिया, भागा आठ अरु बीस।
कंठ पकड़यो प्रह्लाद को, कहां तेरो जगदीश।
मोमें, तोमें, खड़ग खम्भ में, तब निकल्यो भभकार।
पकड़ पिछाड़यो चौक में, जाणै सब संसार।

(साखी-संत साहब राम जी)

- विनोद जम्भदास कड़वासरा
हिम्मतपुरा (पंजाब) मो.: 09417681063

सबदवाणी में गुरु महिमा

गतांक से आगे....

आगे सबद संख्या 34 **'जाकै वाद विराम विरांसौ सांसौ सरसौ, कुण कहिसी साल्हा साधौ'**, सबद संख्या 48 में कहा है **'लखमंण लखमंण न कहि आयसां, म्हां थां पड़ै विराऊं'**, फिर सबद संख्या 44 में कहा है **'जड़ जटाधारी लघै न पारी, वाद विवाद वैकरणौं'**, फिर सबद संख्या 92 में कहा है **'वेद कुराण कुंमाया जाळूं, दंत कथा जुगि थाई'**। आगे सबद संख्या 116 में कहा है **'आयसां! म्रगछाला पावड़ी कांय फिरावो, मतूं त कादा उगवंतो भांण ठंभाऊं'**। गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा ये सबद उन नकली व ढोंगी गुरुओं के प्रति कहे गए हैं ताकि लोग असली व नकली गुरु को पहचान सकें। असली गुरु को बिना जाने गुरु ज्ञान और तत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। सबद संख्या 42 में कहा है **'निहचै कांऊं वांऊं होयस्यै, जे गुर विणि खेल पसारी'**। मनमर्जी के स्वयंभू गुरुओं के उपदेशों को कौओं की कांव-कांव बताया है। सबद संख्या 84 में कहा है **'मूंड-मुंडावौ मन न मुंडावौ, मुंहि अभख दिल लोभी'। अंदरि दया नहीं सुर कांने, निंदराला कसोभी'**। आगे गुरु जम्भेश्वर भगवान यह भी चेतावनी देते हैं कि यदि अज्ञानी शिष्य को अज्ञानी गुरु मिल गया तो दोनों का विनाश निश्चित है। जैसे कहा है- **'चेला गुरु अपरचै खींणा, मरतां मोख न पायौ'**।

इसलिए हमारे समाज में साधु-सन्त व महन्तों का बहुत ही महत्व हमारे साहित्य में बताया गया है। यहां तक कि भगवांधारी, समाज के साधु-संत, महन्त को मेरा ही रूप (जम्भेश्वर का) मानना ऐसे लेख उपलब्ध हैं। गुरु के प्रति आदर और श्रद्धा हमारी पुरानी परम्परा है। हमारे समाज में दूसरा संस्कार 'सुगरा संस्कार' या उपनयन संस्कार है, जो योग्य गुरु से धारण करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को कोई न कोई गुरु अवश्य बनाना चाहिए। निगुरे या गुरुहीन व्यक्ति को तत्व प्राप्ति नहीं हो सकती। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने निगुरे व्यक्ति का उल्लेख करते हुए अपनी सबदवाणी में इस प्रकार वर्णन किया है। सबद संख्या 27 **'निगुरा उमंग्या काठ पखाणौ'**। सबद संख्या 63 **'के के नुगरा देता गाळ गहीरूं'**। सबद संख्या 73 **'सुगंणां म्हारा गुंणिया चेला, निगुंणां नहीं अम्यासूं'**। सबद संख्या 90 **'वे फेरि आसंण मुकर होयस्यैं निगुरा थान रचायस्यैं'**। सबद संख्या 95 **'निगुरां कै मन भयौ अंधेरौ, सुगरां सूर उगाणौ'**। सबद संख्या 97 **'पाहंण नांऊं लोहो सकलो, निगुरा चीन्हंत कांई'**। सबद संख्या 107 **'मोहे सेवै सेई जंण मेरा, मैं र जना का दासूं, गरू न चिन्हौं पंथ न पायौ जां गळि पडी परासूं'**।

इसलिए सतगुरु से नुगरापन दूर करने के लिए सुगरा संस्कार या उपनयन संस्कार कराना आवश्यक है। जब शिशु का माता के गर्भ से जन्म होता है तो उस पर अनेक जन्मों के संस्कार हावी रहते हैं। यज्ञोपवीत (उपनयन) सुगरा संस्कार द्वारा बुरे संस्कारों को नष्ट करके अच्छे संस्कारों को बढ़ावा दिया जाता है। मनुस्मृति में कहा गया है कि मनुष्य का पहला जन्म माता के गर्भ से होता है और दूसरा जन्म यज्ञोपवीत (उपनयन) सुगरा संस्कारा धारण करने से होता है। जो व्यक्ति यज्ञोपवीत (उपनयन) सुगरा संस्कार के बिना मंत्रों का जप और पूजा पाठ करते हैं, वे सब निष्फल हो जाते हैं। इसके साथ ही, इसके विपरीत फल भी भुगतने पड़ते हैं। यज्ञोपवीत संस्कार हो जाने के बाद व्यक्ति को सभी

धार्मिक कार्य सम्पन्न कराने के अधिकार मिल जाते हैं। ऐसा हमारी जम्भवाणी एवं वेदांत रामायण में कहा गया है।

चार प्रकार के गुरु : **1. दृश्य गुरु**- जैसे गुरु के दर्शन मात्र से उद्धार हो जाता है। जिस प्रकार मछली पानी में अंडा देकर उस पर दृष्टि रखती है, उसी से अंडा पकता है। उसी प्रकार गुरु की सम्यक दृष्टि से मनुष्य का या शिष्य का उद्धार हो जाता है।

2. शब्द गुरु- गुरु के उपदेश से मनुष्य का उद्धार हो जाता है। कल्याण हो जाता है। जिस प्रकार टिटहरी (टिंटोडी) मैदान में अंडा देने के बाद उड़-उड़ कर उसके ऊपर आवाज करती है। उसी आवाज से (उपदेश से) अंडा पककर उसमें से बच्चे निकलते हैं। इसी प्रकार गुरु के उपदेश से व्यक्ति या शिष्य का उद्धार हो जाता है।

3. स्मरण गुरु- गुरु के स्मरण मात्र से, ध्यान करने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है। गुरु जो उपदेश शब्दों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से देते हैं, उनका सान्निध्य न रहने पर भी उपदेशों के स्मरण मात्र से व्यक्ति का उद्धार हो जाता है। जिस प्रकार मादा कछुआ पानी के किनारे पर अंडा रेत में देती है और वह स्वयं जल में चली जाती है, मगर वह हरदम अंडे का स्मरण करती रहती है। उसी स्मरण सेवन विधि से अण्डे में से बच्चे निकलते हैं। इसी प्रकार गुरु के स्मरण से मनुष्य का उद्धार हो जाता है।

4. स्पर्श गुरु- गुरु के स्पर्श मात्र से, आशीर्वाद मात्र से मनुष्य का कल्याण अवश्यम्भावी है। जिस प्रकार मोरनी अपने अण्डे को मैदान में बार-बार स्पर्श कर सेती है। चुग्गा पाणी करके वापस आकर अण्डों के ऊपर बैठ जाती है। उसी स्पर्श से अण्डे पक कर उनमें से बच्चे निकलते हैं। उसी प्रकार सद्गुरु के स्पर्श मात्र से, उनके आशीर्वाद से मनुष्य को ज्ञान प्राप्त हो जाता है। उसका कल्याण हो जाता है।

इस प्रकार गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा आध्यात्मिक और लौकिक गुरु की सच्ची पहचान कर आत्मकल्याण की बात अपनी सबदवाणी में कही है। इसके लिए आज हमारे आचरण और विचार को पवित्र करने की जरूरत है। हम एक-दूसरे के साथ न तो नम्रता का व्यवहार करते हैं और न भलाई का। आज ऐसे गुरु चाहिए जिनमें दिखावा न हो और वे घमंड, कपट, नफरत, पक्षपात से रहित हो। ताकि आज के मनुष्य को नया निर्माण, संस्कार, सरलता, भलाई, सच्चाई, ईमानदारी के गुण मिल सकें। परिवार सहोदरों, रिश्तेदारों और मित्रों से बनता है। धार्मिक कार्य परिवार के साथ बैठकर करने चाहिए, इससे स्नेह व एकता बढ़ती है तथा स्थापित सामाजिक परम्पराओं, रीति-रिवाजों और प्रथागत नियमों का पालन होता रहे जिससे संस्कृति का संरक्षण हो सके। लेकिन व्यस्तताओं के कारण इनका निर्वहन आजकल कठिन लगता है।

आज के निरंकुश और विलासी युवा मानस को संयम, सदाचार और श्रद्धा में परिवर्तित करने की आवश्यकता है। सर्व जीव समादर की भावना मनुष्य में होनी चाहिए। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति में शिखर छूने के पश्चात भी मनुष्य के जीवन से आंतरिक शांति उतनी ही दूर होती जा रही है। निराशा के वातावरण में मनुष्य अपनी वास्तविक शक्ति एवं आन्तरिक शान्ति का स्रोत ही भूल चुका है। वह भीतर से अत्यन्त शक्तिहीन एवं असहाय महसूस करता है क्योंकि उसने अपनी शक्ति पर घमंड विकसित करते हुए भगवान में विश्वास को दिन प्रतिदिन खोने की नीति अपनाई। स्वामी विवेकान्द जी ने कहा था कि 'किसी भी समाज की महानतम शक्ति स्रोत है- परमात्मा में विश्वास और श्रद्धा। तब किसी समाज का भगवान के प्रति विश्वास उठ जाता है तो वह मृतप्राय: हो जाता है'।

प्रगति की राह पर ज्ञान से बड़ा कोई साथी नहीं

और ज्ञान मिलता है सद्गुरुओं से। शरीर सद्कर्मों और मन सद्विचारों से संवरेगा। सद्विचार संवरते हैं सिमरन से, सिमरन के लिए शब्द की ताकत चाहिए। सद्विचारों की औषधि, सदैव सकारात्मक चिंतन और सृजनात्मक कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करती है।

शरीर, मन और वाणी पर प्रतिदिन जो मैल जमता है, उसके रेच की विधि है, कायोत्सर्ग। काया का उत्थान और यह कार्य सद्गुरु ही कर सकते हैं। जहां भाव कषाय युक्त है, उनसे रंगा हुआ है। वहां सकारात्मकता नहीं आती और उसके बिना चिंतन भी सही नहीं होता। चिंतन को पवित्र बनाने के लिए भाव का परिष्कार जरूरी है। भाव शुद्धि है तो चिंतन भी शुद्ध होगा।

बिश्नोई समाज में परवर्ती समय में बहुत ही उच्च कोटि के विद्वान लौकिक गुरु साधु, सन्त, महन्त हुए हैं जिनमें से कुछ का उल्लेख यहां किया जा रहा है- जैसे- नाथोजी, रेड़ोजी, वील्होजी, रणधीर जी, सुरजन जी, केशो जी, ऊदो जी, परमानन्दजी, साहबराम जी आदि। जिन्होंने गुरु जम्भेश्वर भगवान की सबदवाणी एवं 29 धर्म नियमों की व्याख्या करते हुए अथाह साहित्य का सृजन किया जिसमें उस परम गुरु विष्णु और जाम्भोजी को पहचानने और आत्मकल्याण के लिए 'जिया ने जुगति और मूवा ने मुक्ति' जाम्भोजी का संदेश जनमानस तक पहुंचाया। इसके अतिरिक्त साखी, हरजस, भजन, चौपाई, छन्द, छप्पय, सवैया, कवित्त और आरती आदि की रचना कर गुरु जम्भेश्वर भगवान के दर्शन की पद्धति से समाज की सेवा की गई। वर्तमान समय में भी हमारे समाज में कई विद्वान एवं मूर्धन्य साधु, सन्त, महन्त मौजूद हैं जो जाम्भाणी हरिकथा ज्ञान यज्ञ से समाज को नई दिशा एवं मार्ग दर्शन से लाभान्वित कर रहे हैं। इनमें सच्चे गुरु को पहचानने की क्षमता है। समाज को इन लौकिक गुरुओं की शिक्षा से लाभ उठाना चाहिए। विशेष रूप से विद्वान गुरुओं का नामोल्लेख इस प्रकार है:- अनन्तकोटि श्री विभूषित सन्त शिरोमणि वयोवृद्ध स्वामी रामानन्दजी आचार्य महाराज, मुकाम पीठाधीश्वर। वयोवृद्ध स्वामी भागीरथजी आचार्य। डॉ. गोवर्धनराम जी आचार्य, स्वामी कृष्णानन्दजी आचार्य, स्वामी राजेन्द्रानन्दजी हरिद्वार, महन्त रामाकिशन जी महाराज, स्वामी भागीरथदास जी शास्त्री, महन्त रतीरामजी महाराज, महन्त छगनप्रकाश जी महाराज, महन्त भगवानदास जी महाराज, महन्त जुगतीप्रकाश जी महाराज रोटू धाम, महन्त राजेन्द्रानन्दजी लालासर साथरी, सन्त मनोहरदास जी मेहराणा धोरा, सन्त कृपाचार्य जी महाराज बणीधाम इत्यादि। इनके अलावा कई साधु, सन्त संगीत गायन कला के विद्वान हैं।

- **मोहनलाल लोहमरोड़,** रोटू, नागौर (राज.)
ई-35, के.के. कालोनी, बीकानेर (राज.)
फोन : 9414103029

लेखकों से अनुरोध है कि..

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी जून का अंक पर्यावरण अंक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। पर्यावरण से सम्बन्धित लेख, कविता, गीत, कहानी इस अंक हेतु आमन्त्रित हैं। आपकी रचना व सुझाव 15 अप्रैल, 2012 तक अमर ज्योति कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए। आप अपनी रचना Kruti Dev, AAText फोंट में टाईप करके भी भेज सकते हैं। हमारा ईमेल पता : editor@amarjyotipatrika.com, info@amarjyotipatrika.com

सम्पादक

बधाई सन्देश

श्री अनिल कुमार सिंह बिश्नोई (ट्रेनिंग कमान यूनिट एयर फोर्स बेंगलूर में चीफ एडमीनिस्ट्रेटिव अधिकारी) सुपुत्र स्व. श्री फूल कुमार सिंह (पंवार) जी बिश्नोई, निवासी गांव हाकिमपुर, जिला मुरादाबाद (यूपी) की स्क्वाड्रन लीडर से विंग कमांडर के पद पदोन्नति हुई है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

डॉ. सुभाष चन्द्र बिश्नोई निवासी गांव कालीरावण, तह. आदमपुर, जिला हिसार (हरियाणा) की नियुक्ति हरियाणा लोक सेवा आयोग के माध्यम से उच्चतर शिक्षा विभाग में अस्सिटेंट प्रोफेसर (भूगोल), HES-II के पद पर हुई है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

अपूर्वा बिश्नोई सुपुत्री डॉ. एस.पी. बिश्नोई एवं अलका बिश्नोई (आर.ए.एस.) एस.डी.एम., श्री गंगानगर, निवासी गांव बोलावाली (संगरिया) सेंट एन्सलम स्कूल, मानसरोवर, जयपुर की छात्रा ने आई.आई.टी. गुवाहाटी द्वारा आयोजित 'टेक्नोथलोन 2011' में 'सिल्वर सर्टिफिकेट' प्राप्त किया है। अपूर्वा ने अखिल भारतीय 152वीं रैंक प्राप्त कर समाज व स्कूल का नाम रोशन किया है। आपकी इस उपलब्धि पर बिश्नोई समाज, जयपुर व अमर ज्योति पत्रिका परिवार तथा बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

मनीषा सुपुत्री श्री राजेन्द्र प्रसाद बिश्नोई (कालीरावणा), निवासी गांव काजलहेड़ी, जिला फतेहाबाद ने दसवीं की प्रथम सेमेस्टर की बोर्ड परीक्षा में 600 में से 586 अंक (97.6%) लेकर विद्यालय व समाज का नाम रोशन किया है। अंग्रेजी, गणित व सामाजिक में 100 में से 100 अंक प्राप्त किए। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

सुमित बैनीवाल पुत्र श्री रामेश्वर बैनीवाल, निवासी 762, सैक्टर 15-ए, हिसार को St. Martin's Memorial Educational & Welfare Society, Dicess of Delhi under the agies of CNI (Church of North India) में Assist. Account Manager के पद पर नियुक्त किया गया है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री शिवकुमार भादू सुपुत्र श्री भजनलाल भादू, निवासी अबूबशहर, जिला सिरसा की नियुक्ति वित्त विभाग में अनुभाग अधिकारी (Section Officer) के पद पर हुई है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

सामाजिक क्षति

अथक समाजसेवी शिवकुमार कड़वासरा नहीं रहे

आवागमन इस सृष्टि का शाश्वत नियम है। परन्तु इस धरा धाम पर ऐसे समाज सेवक भी आते है जो भौतिक काया के न रहने पर भी लोगों की स्मृतियों में सदैव सजीव रहते हैं। स्मृति शेष शिवकुमार कड़वासरा भी ऐसे ही पुरुष थे।

श्री शिवकुमार कड़वासरा का जन्म 4 मार्च 1958 को राजस्थान प्रान्त के हनुमानगढ जिले के गांव गिलवाला में साधारण किसान परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम श्री सुरजाराम व माता का नाम श्रीमती बरजीदेवी था। पांच भाईयों में सबसे छोटे श्री शिवकुमार थे। उनकी शादी श्री गंगानगर जिले के गांव मुकलावा के श्री अमीलाल जांगू की सुपुत्री सावित्री देवी के साथ हुई। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके परिवार में धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी, सन्तानों में सबसे बड़े पुत्र संदीप कुमार, चन्द्रशेखर, प्रमोद कुमार हैं। पुत्रवधु श्रीमती इन्द्रा देवी व सरोज हैं। पौत्री निशा, रचना व पौत्र लविश है।

श्री कड़वासरा पेशे से एक चिकित्सक थे। उन्होंने **जन स्वास्थ्य मार्ग दर्शक एसोसिऐशन** पंचायत समिति हनुमानगढ के जिलाध्यक्ष रहकर साथियों की समस्या के निदान के लिये संघर्षरत रहे।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की पवित्र तपोस्थली मुक्तिधाम मुकाम के श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल की सदस्यता दिनांक 6 जुलाई 1984 को रायसिंहनगर में सेवक दल के प्रशिक्षण शिविर में ग्रहण की। 3 मार्च 1992 को अखिल भारतीय महासभा मुक्तिधाम मुकाम द्वारा सामाजिक सेवा (सेवक दल) क्षेत्र में की गई उत्कृष्ट सेवाओं हेतु प्रशंसा-पत्र देकर इनको सम्मानित किया गया।

सन् 1994 में इनकी सेवा से प्रभावित होकर बिश्नोई समाज ने इनको हनुमानगढ जिले के श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के सचिव पद पर निर्वाचित किया। आपने श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल की ओर से हनुमानगढ़ धर्मशाला का निर्माण जन सहयोग द्वारा करवाया गया। श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री के पद पर भी कार्य किया और राष्ट्रीय कार्यकारिणी में सदस्य के रूप में भी कार्यरत रहे। आप सन् 1986 से महासभा व प्रतिभा प्रोत्साहन समिति के सदस्य थे। आपको जांभाणी साहित्य में विशेष रूचि थी। प्राचीन साहित्य की डिजीटल सकेनिंग करवाने में आपका विशेष सहयोग रहा था।

आपके मन में किसानों की सेवा का विशेष भाव था इसलिए भारतीय किसान संघ के संस्थापक श्री दतोपंत ठेंगडी से प्रभावित होकर दिनांक 28 अगस्त 1990 को भारतीय किसान संघ की जिला कार्यकारिणी में सदस्य के रूप में प्रवेश किया। इसके बाद जिला श्रीगंगानगर की पंचायत समिति, हनुमानगढ़ के मंत्री, श्रीगंगानगर के महामंत्री हनुमानगढ़ के जिलाध्यक्ष व राजस्थान के उपाध्यक्ष के पद पर भी कार्य किया।

सन् 2001 में राजस्थान सरकार ने उन्हें **''मानद वन्य जीव प्रतिपालक वन्यजीव सुरक्षा''** का सदस्य नियुक्त किया। दिनांक 13 मई 2006 को भारतीय किसान संघ का जोधपुर प्रान्त के प्रान्त उपाध्यक्ष बनाए गए। श्रीमती वसुन्धरा राजे (पूर्व मुख्यमंत्री) सरकार में किसानों को दी जाने वाली सुविधाओं की बजट कमेटी का सदस्य भी बनाया गया। इसी दौरान किसानों को सिंचाई के लिये पानी की व्यवस्था करवाने बाबत राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा जी ने डैम प्रोजेक्ट का निरीक्षण करने के लिये उच्चाधिकारियों की टीम के साथ किसान प्रतिनिधि के रूप में भेजा था।

आप मैसूर में होने वाले किसान संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने जाते समय बैंगलोर रूके। वहीं पर करीब रात्रि सवा बारह बजे इनको हृदय में दर्द का अनुभव हुआ इन्हें तुरन्त श्री निवासा अस्पताल नियर चिकलालबाग, बैंगलोर ले जाया गया। वहां चिकित्सा के बाद भी इनकी रात को 1.25 बजे दिनांक 2 फरवरी, 2012 को हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया।

मैं सारे समाज की तरफ से भगवान जाम्भोजी से प्रार्थना करता हूं कि श्री शिवकुमार कड़वासरा की जीवात्मा को भगवान अपने चरणों में स्थान देकर मोक्ष प्रदान करे। इस दु:ख की घड़ी में भगवान इनके पूरे परिवार को शक्ति प्रदान कर सांत्वना प्रदान करे। इनके इस संसार से जाने पर परिवार को तो क्षति हुई ही है परन्तु बिश्नोई समाज को भी भारी धक्का लगा है।

- विनोद धारणियां
राष्ट्रीय सचिव, अ.भा.बि. महासभा, मुक्ति धाम मुकाम

बिश्नोई पंथ परिचय-2

भादव बदी अष्टमी विक्रम सम्वत् 1508 को वर्तमान राजस्थान के नागौर जिला के पीपासर ग्राम में पिता श्री लोहटजी व माता श्री हांसा देवी के घर गुरु जाम्भोजी ने अवतार लिया। गुरु जाम्भोजी ने लौकिक क्रियाओं के साथ-साथ अलौकिक विभूतियों से सबको अचरज में डाल दिया। उन्होंने सृष्टि की रचना व ब्रह्माण्ड का प्रमाण सहित ज्ञान दिया। यह सब हमें गुरु जाम्भोजी के मंत्र, सबदवाणी एवं 29 नियमों के रूप में आज भी उपलब्ध है। इन तीनों अंगों के विवेचन, विश्लेषण व अध्ययन से उनकी व्यापक विचारधारा का पता चलता है। गुरु महाराज के दर्शन एवं ज्ञान की गहराई की व्याख्या सम्भव नहीं है उसकी तो केवल उनकी कृपा से आत्मानुभूति होने पर ही झलक पायी जा सकती है।

गुरु जाम्भोजी ने सम्वत् 1515 में 'सबदवाणी' का प्रथम सबद अपने श्रीमुख से उच्चरित किया। सबदवाणी उपदेश ही नहीं है बल्कि जीवन विधि की वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रस्तुति है। जब तक मनुष्य बुद्धि और हृदय से जीवन की राहों को पार करता रहेगा तब तक इसकी उपयोगिता निर्विवाद बनी रहेगी। जो सबदवाणी पर जितना अधिक विश्वास बढ़ाएगा उसका भविष्य उतना ही सुरक्षित होता चला जाएगा।

गुरु जाम्भोजी ने समस्त ब्रह्माण्ड के रचयिता के भेद को अति सरल, सुगम एवं सारगर्भित शब्दों में सुनने वाले को उसकी भाषा में समझाया। गुरु महाराज का प्रत्येक शब्द बिश्नोई के लिए बिना किसी शंका संदेह या भ्रम के आज्ञा के रूप में शिरोधार्य है। उन्होंने उपदेश दिया कि समस्त ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाली शक्ति एक है। वही समर्थवान है, उसी से सृष्टि व जीवन की उत्पत्ति की। वही पालनहार व संहारकर्ता है। उसका कोई आकार, रूप, रंग, भेद नहीं है जो सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान है, उसी ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र आदि देवता को उत्पन्न किया। उसी ने आकाश, वायु, जल, तेज व पृथ्वी को अपनी इच्छा से बनाया। उस समर्थवान की इच्छानुसार ही युगों तक प्रकृति का अस्तित्व है।

गुरु जाम्भोजी ने उस समर्थवान को 'विसनूं' (विष्णु) नाम से सम्बोधित किया। विसनूं ही चराचर जगत का मूल व आधार है। 'विसनूं' ही 'सबद' 'गुरु' स्वयंभू, परमात्मा है। उन्होंने उपदेश दिया कि उस समर्थ को अन्य लोग असंख्य नामों से पुकारते हैं लेकिन जो मेरा शिष्य होगा उसके लिए केवलमात्र 'विसनूं' शब्द ही स्मरणीय है। जाम्भोजी गुरु रूप में विसनूं ही हैं। गुरु महाराज ने सबद सं. 115 में कहा है कि **'पवण रूप फिरै परमेश्वर'**। आज भी गुरु महाराज पवन रूप में सर्वत्र विचरण करते हुए सर्वव्यापक हैं। उनका कोई रंग, रूप, आकार नहीं होने के कारण गुरु जाम्भोजी ने किसी प्रतीक या मूर्ति की पूजा को पाखण्ड बताया। उन्होंने उपदेश दिया कि परमेश्वर किसी पूजा स्थल, तीर्थ स्थल, पहाड़, गुफा या समुद्र में नहीं है। जो ऐसे स्थान पर भगवान को खोजता है उसका जीवन सारहीन एवं व्यर्थ है। केवलमात्र 'विसनूं' शब्द के जाप व आराधना से उस परमसत्ता से साक्षात् हुआ जा सकता है।

आज तक पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कोई ठोस मत या आधार नहीं है कि पहले जीवन बना या अण्डा। गुरु जाम्भोजी ने इस सम्बन्ध में भ्रांति को दूर कर दिया। गुरु महाराज ने बताया कि पहले अण्डा बना उसमें जल पैदा किया उस जल में प्रथम जीव ने शरीर का आकार लिया। इस सम्बन्ध में गुरुजी ने कलश पूजा मंत्र में कहा है- **'पांच तत्व मिल इण्ड उपायो, इण्डे मध्य जल उपजायो, जल मा विसनूं रूप उपनें'**। सबद सं. 93 में **'आद शब्द अनाहदवाणी, चौदह भवन रह्याछल पाणी। जिंहि पाणी से इण्ड उपन्ना, उपन्ना ब्रह्मा इन्द्र मुरारी'**। सबद सं. 27 में **'इण्डे मध्य पिण्ड उपन्ना, पिण्डे मध्य बिंब उपन्ना, इण्डे मध्य जीव उपन्ना'**। सबद

संख्या 54 में **'इण्डो फुटो बेला बरती'**। इस प्रकार गुरु जाम्भोजी ने सृष्टि में जीव के प्रादुर्भाव के रहस्य का भेद अपने शिष्यों को बातया। गुरु महाराज की वाणी के आधार पर इस तथ्य में कोई शंका या संदेह नहीं है कि जीव से पहले अण्डा बना। प्रत्येक बिश्नोई का यह निर्विवाद मत है कि जीव से पहले अण्डे को विसनू ने आकार दिया और उसमें जीव पैदा किया। यही जीव के आगमन का मूल है।

विसनू से बड़ी कोई सत्ता नहीं है। सबद सं. 2 में बताया कि आद अनाद तो हम रचीलो... यानि जो प्राचीनतम है उसकी विसनूं ने रचना की है विसनूं की रचना करने वाला कोई नहीं है क्योंकि इससे पहले **'होता एक निरंजन शंभू के होता धंधुकारू'** सबद सं. 4 **'रूप अरूप रमू पिण्डे ब्रह्मण्डे घट घट अघट रहायो, मोरे माया न छाया रूप ना रेखा बाहर भितर अगम अलेखा'**, सबद सं. 19 में विसनूं की व्यापकता प्रकट होती है। गुरु महाराज ने सबद 54 में विसनूं के सम्बन्ध में बताया है कि **'सप्त पताले तिहूं त्रिलोके चवदा भवणे, गगन गहीरे बाहर भीतर सर्व निरंजन जहां चिन्हो तहां सोई'**।

विसनूं (विष्णु) अवतार गुरु जाम्भोजी के अनुयायी बिश्नोई के लिए विसनूं नाम के अलावा अन्य कोई भी नाम महत्त्व नहीं रखता है। बिश्नोई ही नहीं प्रत्येक प्राणी इस नाम के जाप से भवसागर तर जाता है। विसनूं जाप के अलावा किसी अन्य नाम का जाप बिश्नोई के लिए स्वीकार्य नहीं है। जो व्यक्ति गुरु जाम्भोजी की वाणी के महत्व को नहीं समझता केवल वही भ्रमित होकर मूल को छोड़ पत्तों को पूजने व नाम जपने लगता है। जो मूल को जपता है उसे फल, फूल, पत्ते, डालियों का नाम लेने की आवश्यकता नहीं रहती है। गुरु महाराज ने उपदेश दिया है कि **'जां सिंच्या ना मूलू तां प्रत्यक्ष थूलूं'**।

राजाराम थालोड़ एडवोकेट
30, कैनाल पार्क, श्रीगंगानगर (राज.)
मो. : 9414512169

आरती कीजै नरसिंह कुंवर की

आरती कीजै नरसिंह कुंवर की।
वेद विमल यश गाऊं मेरे प्रभु जी॥
पहली आरती प्रह्लाद उबारे।
हिरणाकुश नख उदर विदारे॥
दूसरी आरती वामन सेवा।
बलि के द्वारे पधारे हरि देवा॥
तीसरी आरती ब्रह्म पधारे।
सहसबाहु के भुजा उखारे॥
चौथी आरती असुर संहारे।
भक्त विभीषण लंक पधारे॥
पांचवीं आरती कंस पछारे।
गोपी ग्वाल सखा प्रतिपाले॥
आरती कीजै नरसिंह कुंवर की।
वेद विमल यश गाऊं मेरे प्रभु जी॥

– मृगेन्द्र वशिष्ठ, हिसार

होलियाए दोहे

होली तो अब सामने
खेलेंगे सब रंग।
महंगाई ऐसी बढ़ी
फीका हुआ उमंग॥
पैसा निकले हाथ से
ज्यों मुट्ठी से रेत।
रंग दिखे ना आस
की सूखे हैं सब खेत॥
एक रंग आतंक का
दूजा भ्रष्टाचार।
सभी सुरक्षा संग ले
चलती है सरकार॥
मौसम और इन्सान
का बदला खूब स्वभाव।
है वसंत पतझड़ भरा, आदम हृदय न भाव॥

विश्व अहिंसा का पथ प्रदर्शक : बिश्नोई धर्म

आज समग्र विश्व हिंसा से आतंकित है। हाल ही में हम टयूनिशिया, मिश्र, लीबिया, सीरिया इत्यादि देशों में तानाशासकों द्वारा किए गए रक्तरंजित कृत्यों से भयास्पद स्थिति में हैं। मनुष्य मानवोचित गुणों से पतित होकर पाश्विक आचरण कर रहा है। इस सम्पूर्ण परिदृश्य को दृष्टिगोचर करने पर 15वीं शताब्दी के गुरु जम्भेश्वर जी का मानव जाति को अहिंसा का जो उपदेश दिया गया। वर्तमान में वह बड़ा ही प्रासंगिक है। जम्भदेवजी की शिक्षाओं को हिन्दू-मुस्लिम-सिख-इसाई सभी को जीवन में आत्मसात करने आवश्यकता है। गुरुजी ने जीव हत्या के लिए उद्यत काजी को सम्बोधित करते हुए कहा-

ओ३म् सुण रे काजी सुणरे मुल्ला, सुण रे बकर कसाई।
किणरी थरपी छाली रोसो, किणरी गाडर गाई।

अर्थात् बकरी भेड़ इत्यादि जीवों की हत्या करने वाले काजी तुम मेरी बात ध्यानपूर्ण श्रवण करो किस महापुरुष पैगम्बर ने यह विधान बनाया है कि तुम इन भेड़, बकरी, गायों पर छुरी चलाओ। तुम खुद अपने दोषों को छिपाने के लिए किसी महापुरुष को बदनाम मत करो।

सूल चुभीजै करक दुहैली, तो है है जायों जीव न घाई।

यदि तुम्हारे शरीर में कांटा चुभ जाता है तो उसका दर्द असह्य हो जाता है फिर बेचारे जन्मे जीव ये भी तो शरीरधारी हैं। इनके गले पर छुरी चलाते हो तो कितना कष्ट होता है। इतना ही नहीं मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए गुरुजी ने कहा कि तुम हाथ में छुरी रखते हो तथा अखाद्य मांस इत्यादि सेवन करते हो, फिर भी स्वर्ग जाने की इच्छा रखते हो, यह तो असंभव है।

थे तुरकी छुरकी भिस्ती दावों, खायबा खाज अखाजूं।

मुस्लमानों पर व्यंग्य करते हुए भक्तिकाल के सन्त कबीरदास ने भी कहा है-

'कांकर पत्थर जोड़ के मस्जिद ली चुनाय।
तां चढ़ मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।'

इतना ही नहीं जम्भदेवजी ने तो पढ़े लिखे काजी को जो जीव हत्या में सलंग्न हैं कुरान पढ़ना व्यर्थ बताया-

जिसके गले करद क्यूं सारों, थे पढ़ सुण रहियो खाली।

जम्भदेवजी के वचनों को सुनकर काजी कहता है-

दोहा- **काजी कहै सुण जम्भ जी, किया कर्म न होय,**
नमाज पढ़त है दीन की, सगरा मेल दे धोय।

अर्थात् काजी ने कहा हे जम्भदेवजी! हम लोग दीन इस्लाम धर्म की नमाज पढ़ते हैं, उससे हमारे सभी पाप कर्म मिट जाते हैं। इस प्रश्न के समाधानार्थ गुरुजी ने शब्द 9 का उच्चारण किया-

ओ३म् दिल साबत हज काबो नेडै, क्या उलबंग पुकारो।
भाई नाऊं बलद पियारों ताकै गलै करद क्यूं सारों।
बिन चीन्है खुदाय बिबरजत, केहा मुसलमानों।
काफर मुकर सब होकर राह गुमायों, जोय-जोय गाफिल करें धिगाणों।
ज्यूं थे पच्छिम दिशा उलंबंग पुकारों, भल जे यो चिन्हों रहमाणों।

भावार्थ- यदि तुम्हारे हृदय सच्चे हैं तो तुम्हारे काबे का हज नजदीक ही है, तो फिर तुम ऊंचे मकानों पर चढ़कर उस अल्ला को क्यों पुकारते हो वह तो तुम्हारे हृदय में है। अपने प्रियजन भ्राता से भी बैल प्रिय होता है क्योंकि भाई तो कभी भी जवाब दे सकता है, किन्तु भोला-भाला बैल कभी संकट की घड़ी में भी जवाब नहीं देता है और आप लोग तो महामूर्ख हैं जो उस बैल के गले पर

भी करद चला देते हो तथा तुम लोगों को ईश्वर की पहचान तो है नहीं। उस खुदा ने तो जीव हत्या करना मना किया है, तो तुम सच्चे मुसलमान कैसे हो सकते हो? शिष्य अगर गुरु का कहना न माने तो वह कैसा शिष्य? अपने गुरु के वचनों को छोड़कर आप लोग वास्तव में काफिर नास्तिक हो चुके हो और तुम्हें अपने वास्तविक मार्ग का तो ज्ञान है किन्तु तुम जानबूझकर पाप कर्म में प्रवृत हो गए हो।

जिस प्रकार से आप लोग पश्चिम दिशा की ओर मुख करके हेला (आवाज) मारते हो ठीक उसी प्रकार यदि ज्ञान के सागर ईश्वर को सच्चे दिल से याद करो तो तुम्हारा कल्याण निश्चित है।

इतना ही नहीं जम्भदेवजी ने कहा-

ओ३म् महमंद महमंद न कर काजी,
महमंद का तो विषम विचारूं।
महमंद हाथ करद जो होती
लोहै घड़ी न सारूं।

भावार्थ- अपने कुकर्मों पर परदा डालने के लिए हे काजी! तूं मुहमंद का नाम बार-बार मत ले तुम्हारे विचार कर्त्तव्य से मुहमंद का कोई मेलजोल नहीं है, यदि तेरी यह मान्यता है कि मुहमंद भी हाथ में करद रखते थे तो यह बात सर्वथा गलत है, क्योंकि प्रथमत: मुहमंद जैसे महापुरुष हिंसा वाली खड्ग रख ही नहीं सकते और रखते भी हैं तो वह लोहे की बनी हुई नहीं थी। वह तो ज्ञान रूपी खड्ग थी जो पापनाशक थी। मुहमंद तो पूर्णतया हक से कमाई कर शाकाहारी भोजन करते थे और तुम लोग अपने को उनका शिष्य बतलाकर मुर्दा खाते हो। अर्थात् मांसाहारी होकर उनके धर्म का अनुयायी कभी न बन सकते। इस प्रकार गुरु महाराज के अमृतमय वचनों का श्रवण कर काजी अपने स्थान पर वापिस चला गया।

- **सुनील गोदारा** (व.अ. संस्कृत, J.R.F.)
गांव 5एलसी, डा. डाबला, तह. रायसिंहनगर,
जिला श्रीगंगानगर (राज.) मो.: 8432227332

हमारी परम्पराएं

उन्नतीस नियम में चल पाए वो ही बिश्नोई कहलाए।
यह पन्थ जम्भ गुरु चलाए, हमारी उज्ज्वल परम्पराएं।
स्त्री रजस्वला राखे, तीस दिन सुतक सू जागे।
शील सन्तोष रख पाए, वो ही बिश्नोई कहलाए।
दया, क्षमा, धर्म बताया, जीव दया महत्व कराया।
हरियाली भाव बताया वो ही बिश्नोई कहलाए।
अमल अमर सूं दूर भागे, नशीली वस्तु दूर राखे।
मांस, नील दूर रख पाए, वो ही बिश्नोई कहलाए।
चोरी, झूठ, अधम, बताए, बाद सूं परहेज कराए।
अनिन्दा घाट धर्म बताए, वो ही बिश्नोई कहलाए।
हमारी उज्ज्वल परम्पराएं, यह पंथ जम्भ गुरु चलाए।

- **प्रेम पूनियां**
थला की ढाणी, रेण, तह. मेड़ता सीटी,
जिला नागौर (राज.) मो. 09460578406

ईमानदारी आज भी जिन्दा है

श्री ईश्वर सहारण सुपुत्र श्री रामकरण सहारण, निवासी गांव चिकनवास, जिला हिसार (हरियाणा रोडवेज फतेहाबाद में चालक पद पर) व श्री हवासिंह सुपुत्र श्री भागीरथ भादू, निवासी गांव लांधड़ी, जिला हिसार (हरियाणा रोडवेज फतेहाबाद में परिचालक पद पर) ने बस में गुम हुए 7 लाख रुपयों के जेवरात व नकदी उसके मालिक को वापिस लौटाकर नेकदिली व ईमानदारी का कार्य किया है। आप दोनों ने ईमानदारी का परिचय देकर बिश्नोई समाज का नाम रोशन किया है। आपके इस सराहनीय कार्य पर समाज को गर्व है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

ध्यान का महत्व

इस सृष्टि की रचना करते समय ही ईश्वर, परमपिता परमेश्वर ने हर जीव, प्राणी को अनेकों शक्तियां उनके अंदर ही दी हैं। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। आदिकाल से राजाओं, महाराजाओं, साधु-संतों, ऋषि-मुनियों, दानवों तक ने ध्यान और साधना के बल पर अपनी अनेकों सोई हुई शक्तियों को जगाया और समस्त ब्रह्माण्ड एवं पृथ्वीलोक को अलौकिक एवं दैविक शक्तियों से जगमग रखा।

जैसे-जैसे समय अपनी गति से बढ़ता गया साल दर साल, शताब्दी दर शताब्दी मनुष्य ने भी विज्ञान और ज्ञान के बल पर अपनी मजबूत इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए नित नई मशीनों, कारखानों का निर्माण किया और इसके साथ ही ईश्वर द्वारा रचित इस सृष्टि के आधार स्वरूप के साथ भी खेल खेलने लगा। फलत: कहीं ग्लोबल वार्मिंग, कहीं सुनामी या फिर भूकम्प/ज्वालामुखी, ग्लेशियरों का पिघलना एवं अवैध रूप से जंगलों की कटाई निरन्तर जारी है।

समस्त सृष्टि पर मानव ने अपने स्वयं के परिश्रम करने की बजाय मशीनों का सहारा लेने लगा है। इससे मनुष्य की शरीर की अधिकांश कार्यक्षमता प्रभावित हुई। परिणामस्वरूप नई शताब्दी में आगे बढ़ने के साथ-साथ नई एवं जानलेवा बीमारियों के कारण असमय/अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त होने लगा है।

प्राय: देखने में यह आता है मनुष्य (हम) उसी अंग का प्रयोग करता है जिसकी उसे जरूरत होती है। जिसकी सहायता से काम किया जाए। अन्यथा प्रयासहीनता/अभाव के कारण स्तंभ हम (मनुष्य) अपने शरीर की उन इन्द्रियों को जगाने में असमर्थ रहते हैं जिनकी सहायता से आत्मबल, मन, बुद्धि एवं शरीर को चरम तक पहुंचाया जा सकता है।

ध्यान शक्ति एवं लीला शक्ति इसी के स्वरूप है। स्थाई सफलता तो केवल आध्यात्मिक शक्ति द्वारा मिलेगी और यह शक्ति बाजार एवं चिकित्क के पास नहीं, आपके अपने अंदर है। समय निकाल कर एकान्त और अंधेरे में आंखें बंद करके प्रयासहीन होकर बैठ जाएं। ध्यान लगाकर अपने गुरु मंत्र या ईष्टदेव का नाम स्मरण करने लग जाएं। जीवन की सारी सफलताएं ध्यान लगाकर करने से ही आपके कदम चूमेगी। चिन्ता कदापि ना करें, रात के बाद दिन का होना, हार के बाद जीत का होना तय है, निश्चित है। कर्म के ज्ञान की शक्ति के सहारे और होने की शक्ति के सहारे होने की शक्ति लीला शक्ति कहलाती है। अखण्ड की शक्ति भाग्य के नाम से भी जानी जाती है। रोजमर्रा के जीवन में अनेकों ऐसी घटनाएं देखने सुनने में आती हैं। जब मनुष्य क्रिया किसी उद्देश्य से करता है लेकिन अकस्मात उसका हानि और लाभ किसी अन्य व्यक्ति को प्राप्त हो जाता है यही लीला शक्ति है।

सभी पाठकों को अनुरोध करना चाहूंगा कि इसे अपनाकर अपना, अपने परिवार का, अपनी समस्त सृष्टि को एक नया मार्ग प्रदान करें। याद रखिए 'कम्प्यूटर' को भी मनुष्य ने ही बनाया है फिर भी भला आप उस 'कम्प्यूटर' को मनुष्य से शक्तिशाली कैसे कहेंगे। मनुष्य सम्पूर्ण शक्तियों का केंद्र है, इसमें परमपिता परमात्मा ने सभी शक्तियों का समावेश किया है, जरूरत है सिर्फ इन अपार, अमूल्य एवं अलौकिक शक्तियों को जागृत करने की।

- दिनेश बिश्नोई
110, एच.बी.सी., सिरसा रोड, हिसार (हरियाणा)
मो.: 9813779999

समाज का आधार युवा वर्ग

कस्ती हर तूफान से गुजर सकती है।
बुझी हुई शमां फिर से जल सकती है॥
आत्मविश्वास से आगे बढ़ मानव
किस्मत कभी भी बदल सकती है॥

जीवन उसका नाम है जिसने युक्ति से जीना सीखा है।

समाज का आधार स्तम्भ और (रीढ़) मेरूरज युवा वर्ग है। आज समाज का दारोमदार युवा के कन्धों पर है। समाज का युवा उस समाज का कर्णधार है जिस पर समाज की सम्पूर्ण गतिविधियां राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, प्रशासनिक आवृतन करती हैं। जिस समाज का युवा वर्ग कर्मठ, प्रखर, तेजस्वी, धर्मावलंबी एवं स्वावलंबी होता है। वह समाज सफलता के शिखर पर चार चांद लगाता है। स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं को प्रेरणा देते हुए कहा था-

उठो, जागो, तब तक मत रूको, जब तक तुम मंजिल न हासिल कर लो।

'मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है।
पंखों के प्रज्वन से कुछ नहीं होता, हौसलों में उड़ान होती है।

लेकिन आज हमारे युवा वर्ग किस गली के चौखट पर खड़े हैं। वे हम समाचार पत्रों के अपराध पृष्ठ पर देख सकते हैं। हमारे समाज में एक व्यसन रूपी अभिशाप पल्लवित होने लगा है जो समाज के पर्यावरणीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों को अलग एवं विच्छेदित कर रहा है।

अत: समस्त युवा वर्ग से अपेक्षा है कि समाचार पत्रों के व्यक्तित्व पृष्ठ, होनहार पृष्ठ, खेलकूद पृष्ठ पर प्रकट एवं उल्लेखित होने की तपस्या करें, संघर्ष करें जिससे समाज को नए कलेवर में प्रस्थापित किया जा सके।

साथियो!

समय जीवन की अमूल्य निधि है। सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास एवं विलक्षणता समय पर ही होती है।

'जिसने समय को पहचाना नहीं, उसे कटना पड़ा है।
बच गया गर तलवार से तो उसे फूल पे मिटना पड़ा है।

Time and Tide wait for none.

समय एवं ज्वार किसी का इंतजार नहीं करता। समय एक चलता फिरता भगवान है। जिस व्यक्ति ने समय के महत्व को जानकर जीवन में सदुपयोग किया है तो उसने निश्चित रूप से मंजिल व लक्ष्य को हासिल किया है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

Impossible word lives in fool dictionary.

असंभव शब्द मूर्खों का शब्दकोष है।

यह कथन समय पर चरितार्थ होता है। सफलता उन लोगों के पैरों की रज बन जाती है जिसने तन-मन और लगन से उसे पाने के लिए अपनी सारी शक्ति न्यौछावर करने का प्रयास निरन्तर व अथक रूप से किया है।

जीवन के लिए जरूरी है कि हम अपने चरित्र, व्यवहार, विचारधारा आदि में समयानुकूलन परिवर्तित कर लेना चाहिए। समाज के स्वर्णिम इतिहास के पन्ने अपनी पूर्ण धवलता के साथ विश्व इतिहास की पटलो छाया रहे। इसके लिए हमें व्यसन, अन्धविश्वास, मृत्युभोज, बाल-विवाह, दहेज लोलुपता, अन्तर्जातीय विवाह आदि प्रथाओं को सिरे से नकारना होगा। ताकि समाज सुधार के बादल मधुर जल के साथ बरसकर खुशहाली लाए। अत: गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा प्रणीत उन्नतीस नियम का हम सब मिलकर अनुसरण करें जिससे हमारी आन-शान-मान मार्यादा बनी रहे। जाम्भाणी इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हमारी धवलता, त्याग, सहयोग, अनुशासन, पर्यावरण सुरक्षा, जीवदया पर मुस्कराते रहें।

उक्त पंक्तियों की सद्भावना के साथ...

हिला दे तख्त ताज को, उसे बलवान कहते हैं।
मिटा दे पीर दरिद्रों की, उसे धनवान कहते हैं।
बदल दे तस्वीर तकदीर की, उसे भगवान कहते हैं।
हटा दे जुल्म जगत के, उसे इन्सान कहते हैं।
परिवर्तित कर दे समन्दर को, उसे तूफान कहते हैं।
बना दे राख मानव को, श्मशाान कहते हैं।
पथविहीन मानव को राह दिखाए, महान कहते हैं।
भविष्यनिधि के सपने सजाए, उसे अरमान कहते हैं।

- अरमान कड़वासरा 'जम्भस्नेही'
जिला प्रभारी, बाड़मेर, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा

मुक्तिधाम मुकाम में फाल्गुन मेला- एक झलक

वर्षभर में बिश्नोई समाज में गुरु जम्भेश्वर जी की स्मृति में अनेक मेलों का आयोजन होता है परन्तु मुक्तिधाम मुकाम में फाल्गुन में लगने वाले मेले की बात कुछ और ही है। यह सही अर्थों में बिश्नोई समाज का महाकुम्भ है। इस वर्ष इस मेले का आयोजन 21 फरवरी, 2012, वार सोमवार को हुआ। इस मेले में देश के कोने-कोने से पहुंचे श्रद्धालु भक्तों ने श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित किए। मुक्ति धाम मुकाम में सप्ताहभर पहले से ही वातावरण धार्मिक हो उठा। पूरा मेला परिसर गुरु जम्भेश्वर भगवान के भजनों, साखियों व सबदवाणी से गुंजायमान था।

सेवक दल की बैठक : मेले में सभी प्रदेशों से अ.भा. गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के जत्थे गुरु महाराज के प्रति अटूट आस्था लिए हुए 18 फरवरी, 2012 को पहुंचने शुरू हो गए। 19 फरवरी को मेला व्यवस्था के लिए एक बैठक हुई। जिसमें सेवकदल के अध्यक्ष श्री सीताराम मांझू ने मेले में सेवकों को सौंपी गई व्यवस्थाओं को कर्त्तव्यनिष्ठा व ईमानदारी से निभाने की अपील की। सेवकों को मुकाम पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्द जी महाराज ने अपने सम्बोधन में विनम्रता के साथ कार्य करने का संदेश दिया। श्री रामस्वरूप मांझू, श्री दर्शनसिंह जी खीचड़, राजारामजी थालोड़, रामसिंह जी पंवार, महासचिव व सेवकदल महासचिव कृष्णजी खिचड़ ने भी अपने विचार रखे।

बैठक में सभी ने महासभा कार्यकारिणी सदस्य श्री शिव कड़वासरा (गिलवाला) व श्री रामलाल डेलू (साधुवाली) वरिष्ठ सेवकों के असामयिक निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। सभी ने दोनों के कार्य की सराहना करते हुए समाज के लिए उनके निधन के अपूर्णीय क्षति बताया।

साहित्य समिति की बैठक : 20 फरवरी को दोपहर 12 बजे साहित्य संगोष्ठी की बैठक स्वामी कृष्णानन्द जी (ऋषिकेश) की अध्यक्षता में हुई। जिसमें निम्न निर्णय लिए गए: (1) साहित्य को प्रमाणित करवाकर ही किसी को आगे दिया जाए। (2) जूने जांभाणी साहित्य को आधुनिक तकनीक का सहारा लेकर सुरक्षित रखा जाए। (3) भविष्य में साहित्य प्रकाशन से पूर्व साहित्य समिति से अनुमती लेकर ही साहित्य छपावें ताकि एकरूपता बनी रहे। (4) प्रत्येक मेले से एक दिन पूर्व साहित्य समिति की बैठक 12 बजे रखी जाएगी। (5) जाम्भाणी साहित्य प्रकाशन समिति के स्थान पर इसका नाम 'जाम्भाणी साहित्य परिषद' रखा जावे। इस बैठक में उम्मेदाराम जी बिश्नोई, आईपीएस, रामनारायण जी, रामस्वरूप मांझू, सुरेन्द्र बिश्नोई सहित कई साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया।

महासभा की बैठक : 20 फरवरी को ही सायं 5 बजे अ. भा.बि. महासभा की बैठक महासभा संरक्षक चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई (सांसद, हिसार) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम श्री रामसिंह पंवार महासचिव ने महासभा की पिछली कार्यवाही की पुष्टि करवाई व रिपोर्ट प्रस्तुत की। तत्पश्चात् महासभा सदस्य श्री शिवकुमार कड़वासरा व बिश्नोई सभा, हिसार के कोषाध्यक्ष श्री नत्थूराम धत्तरवाल के आकस्मिक निधन पर दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। जिसमें स्वामी रामानन्द जी व स्वामी कृष्णानन्द जी समाज में आ रहे सामाजिक मूल्यों के ह्रास पर चिन्ता व्यक्त करते हुए शुद्ध आचरण पर बल दिया। बैठक में महासभा के पुनर्गठन पर भी कुछ सदस्यों के विचार आए, जिस पर शोक चर्चा हुई। बैठक में श्री जसवन्त सिंह बिश्नोई, श्री हीरालाल बिश्नोई, श्री रामनारायण बिश्नोई, श्री दुड़ाराम जी, श्री लादूराम बिश्नोई सहित महासभा के सभी पदाधिकारियों व माननीय सदस्यों ने भाग लिया।

रात्रि जागरण : 20 फरवरी की रात्रि को हर वर्ष की भांति मुकाम व सम्भराथल पर विशाल जागरण आयोजित किए गए। जागरण में स्वामी श्रद्धानन्दजी, डा. गोवर्धन जी, स्वामी रामानन्द जी, स्वामी मनोहरदास जी, स्वामी लालदास जी, स्वामी भागीरथदास जी आचार्य आदि सन्तों ने साखियों, भजनों, सबदवाणी के माध्यम से गुरु जम्भेश्वर भगवान की महिमा पर प्रकाश डाला व गुरु जम्भेश्वर भगवान के बताए मार्ग पर चलने का संदेश दिया। जागरण सुनने के लिए पूरा पाण्डाल श्रद्धालु भक्तों से भरा हुआ था।

विशाल हवन व पाहल : 21 फरवरी को सूर्योदय के साथ ही मुकाम व सम्भराथल पर विशाल यज्ञ प्रारम्भ

हुआ। मुकाम व सम्भराथल धोरे पर घी व खोपरों की आहुती देकर भक्तजन अपने आपको कृतार्थ कर रहे थे। हवन की सुगन्ध से पूरा वातावरण सुगन्धित हो रहा था तथा हवन की ज्योति दूर-दूर तक दिखाई दे रही थी। सम्भराथल पर भी गुरु जम्भेश्वर भगवान के मुख से निसृत एक सौ बीस सबदों का पाठ हुआ व पाहल बनाया। भक्तजनों के जयकारों से वातावरण धर्ममय हो रहा था।

खुला अधिवेशन : प्रात: 11 बजे अ.भा.बि. महासभा का खुला अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम महासभा के महासचिव रामसिंह जी पंवार ने आए हुए अतिथियों व श्रद्धालुओं का स्वागत किया तथा मेले के सफल संचालन के लिए सभी अधिकारियों, सेवकदल के सदस्यों का धन्यवाद किया। श्री रामस्वरूप जी मांझू व का. रामेश्वर डेलू को मंच संचालन के लिए अधिकृत किया। खुले अधिवेशन की अध्यक्षता चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई (सांसद हिसार) ने की। अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए श्री रामेश्वर लाल डुडी (जिला प्रमुख बीकानेर) ने गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा बताए 29 नियम मानव मात्र के कल्याण के लिए हैं। श्री रामेश्वर डुडी ने कहा कि हर क्षेत्र में मैं बिश्नोई समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करूंगा। श्री डुडी ने लालासर सांथरी में एक ट्यूबवैल लगाने व मुकाम में पार्किंग स्थल बनाने की घोषणा की। श्री कुलदीप बिश्नोई व श्री डुडी ने डुडी जी द्वारा बनायी लंगर भवन की प्याऊ का उद्घाटन भी किया गया। का. हेतराम बेनीवाल ने समाज से समाज हित में एकजुट होने की अपील की।

श्री रामनारायण बिश्नोई, श्रीमती विजयलक्ष्मी बिश्नोई, श्रीमती सुनीता बिश्नोई, दुड़ारामजी, लादूराम जी आदि ने गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला व युवा वर्ग से नशा विहीन जीवन जीने की सीख ली तथा समाज से श्री कुलदीप बिश्नोई के आह्वान के अनुसार चलने को कहा।

हीरालाल जी वकील फलोदी ने जाम्भा मन्दिर के निर्माण कार्य की जानकारी देते हुए बताया कि पांच करोड़ रुपये लग चुके हैं व और भी करोड़ों रुपये लगेंगे। अत: दान देने की अपील की।

डा. गोवर्धनराम जी ने समाज को गुरु जम्भेश्वर भगवान के बताए नियमों पर चलने का संदेश दिया व अंतर्जातीय विवाह को समाज के लिए घातक बताया।

मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई ने सभी श्रद्धालुओं को मेले की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमें गुरु महाराज द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए धर्म एवं पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। श्री बिश्नोई ने समाज से आह्वान किया कि सभी संगठित होकर समाज की प्रगति में योगदान दें अन्यथा समाज पिछड़ जाएगा। खुले अधिवेशन में श्री कुलदीप बिश्नोई का सांसद बनने पर व श्रीमती रेणुका बिश्नोई का विधायक बनने पर अभिनन्दन भी किया गया।

स्वामी रामानन्द जी ने अपने संदेश में बताया कि हमें सबसे पहले स्वयं सुधरें, अपना परिवार सुधारें तो समाज स्वत: सुधर जाएगा। मुख्य समारोह सायं 4.30 बजे समापन हुआ। इस अवसर पर श्री बीरबल जी धारणियां, श्री देवेन्द्र बिश्नोई (A.S.P.), श्री राजाराम धारणियां, श्री सुभाष देहडू (प्रधान), मनोहर लाल गोदारा (सचिव), कृष्ण राड़ (उपाध्यक्ष), बिश्नोई सभा, हिसार उपस्थित थे।

साहित्य स्टाल : मेले में अमर ज्योति, जम्भ ज्योति आदि पत्रिकाओं व जांभाणी तथा धार्मिक साहित्यों की स्टाल भी लगी हुई थी जहां लोगों की विशेष रूचि देखने को मिली। इस मेले में अमर ज्योति की सदस्यमाला में 1500 नए मोती पिरोए गए।

मेला बाजार : हर वर्ष की भांति इस बार भी महासभा द्वारा निर्धारित स्थान पर मेला बाजार लगा। जहां पर विशेष चहल-पहल देखने को मिली। इस मेले में महिलाओं की विशेष रूचि देखी गई। धार्मिक पूजा सामग्री के साथ-साथ कृषि औजार, पींजरा, तिरपाल, मिर्च, चौसांगी, लोहे का सामान, मणिहारी, कैसेट, पुस्तकें आदि की दुकानें भी लगी हुई थी। स्थानीय लोगों ने मेले चार-पांच दिन बाद तक भी खरीददारी की। मुकाम के अतिरिक्त सम्भराथल, पीपासर और लालासर में भी भक्तों का सैलाब उमड़ा हुआ था।

श्री खम्मूराम खिचड़ व उनके सहयोगियों ने पोलीथीन आदि प्रदूषक कारकों से मेले को मुक्त रखा।

- ओमप्रकाश भादू
रिसर्च स्कालर, बीकानेर विश्वविद्यालय
सादुल स्कूल, बीकानेर (राज.)

हलचल

हरियाणा में हिरणों का फिर शिकार : बिश्नोई समाज में रोष बढ़ा

❐ हरियाणा में हिरणों व नील गायों की मौत एवं शिकार का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। बिश्नोई समाज की सतर्कता एवं विरोध के कारण प्रशासन कुछ सक्रिय हुआ है फिर भी शिकारियों एवं शिकारी कुत्तों पर पूर्ण रूप से नकेल नहीं कसी जा सकी है। जनवरी व फरवरी में अलग-अलग स्थानों पर लगभग 15 हिरणों व नील गायों का शिकार हो चुका है, जो अत्यन्त ही चिन्ता व दु:ख का विषय है। अखिल भारतीय बिश्नोई जीव रक्षा सभा व बिश्नोई सभा, हिसार व आदमपुर ने समय-समय पर वन्य जीव रक्षा विभाग व प्रशासन को इस विषय को लेकर सतर्क किया है, फिर भी प्रशासन ने इस विषय को गंभीरता से नहीं लिया है। वन्य जीवों की लगातार हो रही हत्याएं इसी लापरवाही का परिणाम है।

❐ 28 जनवरी, 2012 को बोस्ती (जिला फतेहाबाद) गांव में काले हिरण को गोली मार दी जिसके आरोप में वन्यजीव विभाग ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। बोस्ती के ओमप्रकाश बावरिया को दिनभर चली पंचायत के बाद विभाग ने गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से बंदूक भी बरामद की गई है। आरोपी को कुरुक्षेत्र स्थित पर्यावरण अदालत में पेश किया गया।

ग्रामीण मूलक राज फौजी व रामकिशन सुबह बणी की ओर निकले तो उन्हें हिरण तड़पता मिला था। इस पर वे हिरण को गांव में ले आए। चिकित्सक के पहुंचने से पहले ही हिरण ने दम तोड़ दिया था। घटनास्थल का दौरा करने एवं आसपास के लोगों से बातचीत के बाद विभागीय अधिकारियों ने पंचायत से बातचीत की। दिनभर की कार्यवाही के बाद खेतों में रखवाली करने वाले ओमप्रकाश बावरिया को विभाग ने गिरफ्तार कर लिया।

❐ गांव चौधरीवाली (हिसार) में 27 जनवरी को शिकारी कुत्तों के काटने से घायल हुए मादा हिरण ने मंगलवार सुबह दम तोड़ दिया। इस तरह आदमपुर क्षेत्र में तीन सप्ताह में कुल 9 हिरणों की मौत हो चुकी है। इससे पहले मादा हिरण को कुत्तों द्वारा नोचने पर गांव चौधरीवाली की पंचायत ने गांव में सेंचुरी बनाने के लिए तीन एकड़ जमीन देने की घोषणा की थी। अखिल भारतीय जीव रक्षा युवा संगठन ने हिरण की मौत के बाद आपात बैठक बुलाई। बैठक में ग्रामीणों ने 24 घंटे का अल्टीमेटम देते हुए तुरंत कार्यवाही करने की मांग की तथा ग्रामीणों ने कहा कि वन्य जीवों की रक्षा के लिए वे किसी भी चुनौती का सामना करने को तैयार हैं। प्रशासन को चाहिए कि आवारा कुत्तों को पकड़ने का अभियान चलाए।

❐ 7 जनवरी को चौटाला व ढाणी सिखां (सिरसा) के बीच कुत्तों के झुंड द्वारा घायल हुए काले हिरण की सोमवार रात को मौत हो गई। मंगलवार सुबह गांव जंडवाला बिश्नोइयां में हिरण का पोस्टमार्टम करवाने के बाद ग्रामीणों ने उसे गांव में ही दफना दिया। गांव चौटाला व ढाणी सिखां के बीच कुत्तों के झुंड ने खेत के खाल से पानी पी रहे हिरण को घेर लिया था। कुत्तों ने हिरण की दोनों टांगें काट कर जख्मी कर दिया। सूचना मिलने पर अखिल भारतीय वन्य जीव रक्षा बिश्नोई सभा शाखा जंडवाला बिश्नोई के सदस्यों ने मौके पर पहुंच कर हिरण को अपने कब्जे में लेकर गांव में ले आए। वैटेनरी सर्जन डा. राजेंद्र कुमार से घायल हिरण का इलाज करवाया। इलाज के दौरान जख्मी होने के कारण चिकित्सकों को हिरण की दोनों टांगें काटनी पड़ीं। जिसके बाद हिरण का आप्रेशन किया गया। लेकिन शरीर पर हुए घावों से ज्यादा रक्तस्राव होने के कारण हिरण में रक्त की कमी हो गई, उसे बचाया नहीं जा सका।

❐ 8 फरवरी को सायं फतेहाबाद के गांव बड़ोपल में

एक हिरण की मौत हो गई। हिरण को कुत्तों ने नोंच खाया है। घटना बड़ोपल कुम्हारिया मार्ग पर एक ढाणी के पास की है। गांव के राजीव भादू और सुधीर किसी काम से खेत से होकर जा रहे थे तो उन्होंने खेत के कोने पर कुत्तों का झुंड देखा। उन्होंने दौड़कर जब आवारा कुत्तों को भगाया तो सामने एक हिरण का शव पड़ा था। इस मामले की सूचना उन्होंने गांव के लोगों व बिश्नोई सभा से जुड़े प्रतिनिधियों को दी। यहां यह बता दें कि फतेहाबाद में इससे पहले भी तीन जगह कुत्ते हिरणों को नोंच चुके हैं और दो स्थानों पर शिकारियों ने हिरणों का शिकार किया है।

❒ गांव चिन्दड़ में भी शिकारी कुत्तों के काटने से एक हिरण की मौत हो चुकी है।

❒ 3 फरवरी को प्रात: 10 बजे के आसपास जब ह. कृ.वि., हिसार के पहले गेट के पास लगे पंजाब नेशनल बैंक के ए.टी.एम. में बैंक के अधिकारीगण पैसा डालने पहुंचे तो उनके साथ आए बैंक के गार्ड देवीलाल बिश्नोई (निवासी तलवण्डी राणा) ने देखा कि वहीं पुराने डी. सी. निवास के पास कुछ लोग एक नील गाय को घेरकर लाठियों से पीट रहे थे। गुरु जांभो जी का सच्चा शिष्य यह कैसे देख सकता था? देवीलाल का खून खौल उठा। वह धन का पहरेदार एक नील गाय का पहरेदार बन गया। उसने पैसे और अपने अधिकारियों को छोड़कर उस खेत की दीवार को फांद दिया जहां नील गाय को पीटा जा रहा था। देवीलाल ने दुर्दांत खेत मालिक और उसके साथियों को ललकारा। वे लोग संख्या में आठ और देवीलाल अकेला। न्याय का पलड़ा भारी होता है। देवीलाल बिना किसी हिचक के उन आठों से भीड़ गया। इस बीच नील गाय तो बस्ती में भाग गई और आग बबूला हुए उन निर्दयी लोगों ने देवीलाल पर हमला बोल दिया। उससे लाइसेंसी हथियार और मोबाइल छीन लिया ताकि वह कहीं फोन न कर सके। तभी देवीलाल के साथी गार्ड ने बिश्नोई मंदिर हिसार में फोन कर दिया। फोन के साथ ही भूपसिंह, सिकंदर, रामनिवास आदि कर्मचारी व 8-10 अन्य लोग घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े। अब तक देवीलाल अकेला ही उन आठ लोगों से मुकाबला करता रहा। मन्दिर से आए अन्य लोगों को देखकर खेत मालिक सहित उसके साथी दौड़ पड़े जिनमें से चार को पकड़कर पुलिस के सुपुर्द किया गया। घटना की सूचना पाकर जीव रक्षा सभा के जिलाध्यक्ष श्री बनवारीलाल कामरेड व प्रदेशाध्यक्ष कामरेड़ रामेश्वर लाल डेलू भी जीव प्रेमियों के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए। नीलगाय ने पास के मौहल्ले में जाकर दम तोड़ दिया। बाद में बिश्नोई समाज के लोगों की उपस्थिति में नीलगाय का पोस्टमार्टम कर उसे दफनाया गया। देवीलाल की शिकायत पर अपराधियों के विरुद्ध वन्य जीव रक्षा विभाग व हकृवि की पुलिस चौकी में अलग-अलग केस दर्ज करवाया गया।

अगले दिन 4 फरवरी को बिश्नोई मन्दिर, हिसार में एक आपात बैठक हुई जिसमें इस घटना पर रोष प्रकट किया गया। समाज का एक प्रतिनिधि मण्डल बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू, कामरेड रामेश्वर लाल, श्री बनवारीलाल कामरेड के नेतृत्व में पुलिस अधीक्षक अश्विन शैणवी से मिला व सारी घटना की जानकारी दी। इस केस में वन्य जीव रक्षा विभाग अपनी कार्यवाही कर रहा है।

❒ हिरणों का इस तरह मारा जाना चिंता का विषय है। बिश्नोई समाज का मानना है कि ये शिकारी कुत्ते भी शिकारियों द्वारा प्रशिक्षित है और उन्हीं द्वारा प्रेरित होकर हिरणों का शिकार कर रहे हैं। मेरा सभी जीव प्रेमियों से अनुरोध है कि वे इन निरीह प्राणियों की रक्षा करें। अपने खेतों में कंटीली बाड़ न लगाएं। खेतों में रखवाले न रखें। शिकारी संबंधी कोई भी घटना होने पर इसकी सूचना जीव रक्षा विभाग व बिश्नोई जीव रक्षा सभा को दें।

– **कामरेड रामेश्वर डेलू,** प्रदेशाध्यक्ष (हरि.)
बिश्नोई जीव रक्षा सभा, मो. 9896196200

7-9 अप्रैल को होगी त्रिदिवसीय संगोष्ठी

अक्तूबर 2011 की अमर ज्योति में दी गई सूचना व

विद्वानों को भेजे गए पत्र के संदर्भ में सूचित किया जाता है कि 'गुरु जाम्भो जी का वैश्विक चिंतन' विषय पर होने वाली त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की तिथि निश्चित कर दी गई है। यह संगोष्ठी 7-9 अप्रैल, 2012 को आयोजित होगी। संगोष्ठी का आयोजन स्थल 'श्री बिश्नोई सेवा आश्रम' (बिश्नोई बाड़ा) भीमगोडा, हरिद्वार होगा। इस संगोष्ठी में भारतवर्ष के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के प्राफेसरों साथ-साथ स्वाध्यायी विद्वान, शोधार्थी व साधु सन्त गुरु जाम्भोजी के जीवन, धर्म नियम व 'सबदवाणी' के विविध आयामों पर गंभीर विचार मंथन करेंगे। शोधपत्र भेजने वाले विद्वानों से अनुरोध है कि वे अपना शोधपत्र (8-10 पृष्ठों का), सार संक्षेप (लगभग 400 शब्दों में) व अपना पूर्ण परिचय 15 मार्च तक ईमेल करें। ईमेल पता है- skkbishnoi @rediffmail.com। संगोष्ठी में केवल पूर्व में भेजे गए व स्वीकृत हो चुके आलेखों/शोधपत्रों को ही पढ़ने की अनुमति होगी। संगोष्ठी में भाग लेने वाले ज्ञानपिपासु श्रोताओं से अनुरोध है कि वे अपने आगमन की सूचना कम से कम 10 दिन पहले दें ताकि उनके आवास आदि की व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क : स्वामी प्रणवानन्द जी, व्यवस्थापक, श्री बिश्नोई आश्रम, भीमगोडा, हरिद्वार, मो. 9411100029 व राजकुमार सेवक, आयोजन सचिव, मो. 9837672873

जूनागढ़ में गुरु जम्भेश्वर मंदिर का लोकार्पण

श्री बिश्नोई सन्त आश्रम चौकी (सोरठ) जिला जूनागढ़ (गुजरात) में 28 जनवरी, 2012 को श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर में अखण्ड ज्योति एवं कलश की स्थापना की गई। इसे पूर्व रात्रि में जागरण का आयोजन किया गया। जिसमें सभी सन्तों ने गुरु जाम्भोजी की अमृतमयी वाणी उपस्थित जनसमूह के सामने रखी। जागरण में बिश्नोई समाज के गणमान्य सन्त उपस्थित थे। प्रात: 8 बजे स्वामी भागीरथदास जी आचार्य के सान्निध्य में विशाल हवन हुआ व पाहल का आयोजन किया गया। लगभग 15 हजार श्रद्धालुओं को पाहल दिया गया। दिन के 12 बजे मन्दिर के ऊपर कलश की स्थापना की गई। 12.15 बजे उपस्थित जनसमूह ने पण्डाल की ओर प्रस्थान किया। मंच संचालक डॉ. गोर्वधन राम आचार्य शिक्षा शास्त्री ने अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा सबका मन मोह लिया तथा विशेष रूप से समाज में नशा व बाल विवाह जैसी कुरीतियों को बन्द करने का आह्वान किया। पब्बाराम जी बिश्नोई ने कहा कि स्वामी जी के प्रयासों से ही आज गुजरात (सौराष्ट्र) में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का भव्य मन्दिर एवं आश्रम हम लोगों को देखने को मिला। इस प्रकार सभी सन्तों को समाज कल्याण में अपना शत-प्रतिशत योगदान दें। श्री लादूराम जी बिश्नोई (पूर्व सलाहकार मुख्यमंत्री) ने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि आज समाज का बच्चा बारहवीं के बाद कालेज की ओर जाता है लेकिन जिस बच्चे के नंबर 90 प्रतिशत से ज्यादा हैं उसे कालेज की बजाए तकनीकी कोर्स की ओर ध्यान देना चाहिए क्योंकि आज सरकारी नौकरी की कमी है, इसलिए प्राईवेट कम्पनियों में अच्छा वेतन कमा सके।

श्री जसवन्त सिंह जी, पूर्व सांसद ने कहा कि जिस प्रकार गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में कहा- **'कूं कूं कंचन सोरठ मरहठ'** यानि विभिन्न स्थानों पर ज्ञान का दीप जलाया है। उसी प्रकार स्वामी जी ने भी सौराष्ट्र की भूमि पर बिश्नोई समाज के लिए इतना भव्य मन्दिर व आश्रम बनाया। साथ ही कहा कि जब आप इस पावन पवित्र भूमि पर इतनी दूरी तय करके आए हैं तो कम से कम एक बुरी आदत जरूर छोड़कर घर जाएं तभी हमारा यहां आना सार्थक होगा। श्री शिव ज्योतिषानन्द शास्त्री (अजमेर) ने कहा कि 84 लाख जीव योनि भुगतने के बाद यह मानव देह रूपी शरीर प्राप्त होता है, इसलिए हमें सदा परोपकार की भावना रखनी चाहिए।

श्रीमती भावना बहन चिकला पूर्व सांसद एवं पूर्व मंत्री जूनागढ़ ने कहा कि 'यह सौराष्ट्र धरती वीरों की है। यहां शेर नहीं शेरनी दहाड़ मारती हैं'। इस आश्रम एवं मंदिर की देखभाल करना हम सबका कर्त्तव्य है। मैं बिश्नोई समाज का तहदिल से आभार प्रकट

करती हूं जिन्होंने एक खेजड़ी वृक्ष के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, लेकिन वृक्ष नहीं कटने दिए। इतना प्रकृति प्रेमी समाज दुनिया में कोई है तो वह है 'बिश्नोई समाज'। इसलिए मैं अपने आप को धन्य समझती हूं कि मैं आप लोगों के बीच में हूं।

कार्यक्रम के अन्त में परम पूज्य सन्त शिरोमणि स्वामी भागीरथ दास जी आचार्य ने आए हुए सभी सन्तगण एवं हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश तथा गुजरात से आए समाज के लोगों का आभार प्रकट किया तथा भण्डारे में भोजन करके ही अपने गंतव्य स्थान की ओर जाने को कहा। श्री सुधीर धारणियां (भूना) ने स्वामी जी को स्कार्पियो गाड़ी भेंट की।

आए हुए सभी श्रद्धालुओं के लिए भोजन व्यवस्था समस्त बिश्नोई बन्धु बड़ोदरा एवं किशनलाल पंवार भासरणा जिला जोधपुर हाल मुम्बई ने की। दूध एवं फलाहार की व्यवस्था श्री हनुमान सुपुत्र श्री हरिराम पंवार ईसरोल (सांचौर) हाल मुम्बई ने की।

टीवी चैनल साधना पर प्रसारण की व्यवस्था श्री किशनलाल सुपुत्र श्री साजन जी गोदारा कोटड़ा (सांचौर) हाल चेन्नई ने की। यह प्रसारण रात्रि 9 बजे से 2 बजे तक तथा सुबह 10 बजे से 2 बजे तक किया गया।

-**संदीप गोदारा**, कालवास, हिसार

बीरबल एम. बिश्नोई दूसरी बार रेलवे सलाहकार समिति के सदस्य मनोनीत

हुबली : दक्षिण भारतीय बिश्नोई समाज (हुबली) के अध्यक्ष एवं युवा उद्यमी श्री बीरबल एम. बिश्नोई को लगातार दूसरी बार रेलवे सलाहकार समिति के सदस्य मनोनीत किए गए हैं। दक्षिण पश्चिम रेलवे जोन हुबली के अंतर्गत आने वाले वास्कोडीगामा (गोवा) रेलवे सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में दक्षिण पश्चिम रेलवे ने एक अध्यादेश जारी करके आपकी नियुक्ति की है। इससे पूर्व आप 1.1.10 से 31.12.11 तक भी सदस्य रहे हैं। आपकी कार्यप्रणाली को देखते हुए रेलवे ने दूसरी बार 1.1.12 से 31.12.13 तक नियुक्ति की है। आपको वर्ष 2006 में अपाहिजों की सेवा एवं उन्हें कृत्रिम पांव देने पर केन्द्र सरकार द्वारा इन्दिरा गांधी प्रियदर्शनी अवार्ड दिया गया। 2006 में ही अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा मुकाम में सम्मानित भी किया गया।

अमर ज्योति के संस्थापक सम्पादक स्व. सहीराम जोहर की जयंती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिसार : अमर ज्योति के संस्थापक सम्पादक स्व. सहीराम जौहर की 90वीं जयंती पर गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय में 'मीडिया का सामाजिक दायित्व' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डा. वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि प्रजातंत्र के चार स्तंभों में से खबर स्तंभ सबसे मजबूत होता है, जो खबर लेता भी है और देता भी है। खबर स्तंभ की विश्वसनीयता बनी रहे, इसके लिए यह जरूरी है कि संवाद्दाता अपने सामाजिक दायित्वों को समझते हुए तथ्यों पर आधारित ही समाचारों का संकलन करें।

संगोष्ठी का आयोजन हरियाणा ग्रंथ अकादमी व सही राम जौहर स्मृति संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में किया गया।

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए राज्य कवि उदयभानु हंस ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने उपरान्त

पत्रकार व साहित्यकार बारे कविता में बोलते हुए कहा कि ये दोनों एक ही बिरादरी के हैं, 'लेखक देश का रत्न होता है, वो ज्ञान का तीसरा नयन होता है, जिस देश में कलमकार उपेक्षित होता है, उस देश का शीघ्र पतन होता है'।

माखनलाल चुतुर्वेदी विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति श्री राधेश्याम शर्मा ने गोष्ठी में कामरेड सही राम जौहर को नमन करते हुए कहा कि संघर्ष, त्याग व बलिदान से ही पत्रकारिता शुरू हुई है।

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के कुल सचिव डा. आर एस जागलान ने कहा कि पत्रकारिता प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ और इसका महत्व सबसे ज्यादा है।

हरियाणा साहित्य ग्रंथ अकादमी के उपाध्यक्ष व वरिष्ठ पत्रकार श्री कमलेश भारतीय ने कहा कि समाज को बनाने में, संवारने में और बदलाव लाने में पत्रकार का सबसे बड़ा दायित्व होता है।

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग की अध्यक्षा श्रीमती वंदना पांडे ने कामरेड सही राम जौहर को श्रद्धांजलि अर्पित करने उपरान्त कहा कि कामरेड सही राम जौहर ने आजादी के संकल्पों को उस समय साकार किया जब देश को इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। उन्होंने सही मायने में सामाजिक सरोकारों को निभाया।

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के चेयरमैन डा. विरेन्द्र चौहान ने कहा कि मीडिया का दायित्व बेहद महत्वपूर्ण है और समाज में मीडिया को बेहद मान-सम्मान मिला है, जिससे तथ्यों पर आधारित पत्रकारिता का दायित्व और अधिक बढ जाता है।

हरियाणा साहित्य ग्रंथ अकादमी की निदेशका डा. मुक्ता ने विचार गोष्ठी में आये सभी प्रबुद्ध लोगों का धन्यवाद किया और हरियाणा साहित्य ग्रंथ अकादमी की ओर से सभी को एक-एक स्मृति चिह्न भेंट किया। कामरेड सही राम जौहर के पुत्र व संयुक्त निदेशक सूचना, जन सम्पर्क एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग श्री अरुण जौहर ने संगोष्ठी का मंच संचालन किया तथा कामरेड सही राम से जुड़ी अनेक यादें श्रोताओं से सांझी की।

बिश्नोई मन्दिर बोस्ती का उद्घाटन समारोह

गांव बोस्ती, जिला फतेहाबाद में नवनिर्मित गुरु जम्भेश्वर भगवान के मंदिर का उद्घाटन चैत्र अमावस्या 22 मार्च, 2012 को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर 21 मार्च, 2012 को रात्रि जागरण आयोजित किया जाएगा। 22 मार्च को प्रात: हवन व पाहल के पश्चात 10.15 बजे उद्घाटन कार्यक्रम होगा। भविष्य में भी स्थापना दिवस चैत्र अमावस्या को ही मनाया जाएगा।

-श्री रामस्वरूप डारा, प्रधान (9991871652)

बिश्नोई सभा पंचकूला व शिक्षा समिति आदमपुर ने श्री धत्तरवाल के निधन पर शोक व्यक्त किया

❐ बिश्नोई सभा पंचकूला की बैठक सभा प्रधान श्री अचिंतराम गोदारा की अध्यक्षता में हुई। जिसमें बिश्नोई सभा, हिसार के कोषाध्यक्ष श्री नत्थूराम धत्तरवाल के निधन पर शोक प्रकट किया गया। सभा प्रधान ने अपने शोक संदेश में कहा कि श्री धत्तरवाल एक समर्पित समाज सेवी थे। उनके जाने से समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। बिश्नोई सभा पंचकूला प्रभु से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

-राजाराम बैनीवाल सचिव,
बिश्नोई सभा, पंचकूला

❐ गुरु जम्भेश्वर शिक्षा समिति, आदमपुर ने भी प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री नत्थूराम जी धत्तरवाल के निधन पर शोक प्रकट किया। समिति ने कहा कि श्री ध त्तरवाल शिक्षा को समर्पित एक सुलझे हुए शिक्षक व दूरदर्शी प्रशासक थे। वे अध्यापक से लेकर जिला शिक्षा अधिकारी तक विभिन्न पदों पर रहते हुए शिक्षा जगत की महान सेवा की। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

फार्म-4 (देखिए नियम 8)

1.	प्रकाशन स्थल	:	हिसार, हरियाणा
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	(क) मुद्रक का नाम	:	डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार
	(ख) पता	:	डी.एन. कॉलेज रोड, हिसार
4.	प्रकाशक का नाम	:	श्री सुभाष देहडू
	पता	:	प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार, हरियाणा
	(क्या भारत का नागरिक है?)	:	हाँ
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	--
5.	सम्पादक का नाम	:	डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई
	पता	:	कार्यालय, 'अमर ज्योति' श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार, हरियाणा
	(क्या भारत का नागरिक है?)	:	हाँ
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	--
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार हों।	:	बिश्नोई सभा, हिसार

मैं सुभाष देहडू एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

सुभाष देहडू
प्रधान, बिश्नोई सभा,
हिसार-125 001 (हरियाणा)

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2068 चैत्र की अमावस्या

लगेगी : 21.03.2012

बुधवार, सायं 6 बजकर 37 मिनट पर

उतरेगी : 22.03.2012

बृहस्पतिवार, रात्रि 8 बजकर 6 मिनट पर

विक्रमी सम्वत् 2069 बैशाख की अमावस्या

लगेगी : 20.04.2012

शुक्रवार, प्रातः 10 बजकर 25 मिनट पर

उतरेगी : 21.04.2012

शनिवार, दोपहर 12 बजकर 48 मिनट पर

चैत्र अमावस्या मेला

जाम्भोलाव, लोदीपुर, सोनड़ी,
सरनाऊ, गुड़मालानी
22.03.2012 बृहस्पतिवार

होली–7.3.2012

पाहल–8.3.2012

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले)
मो.: 09416407290

उन्नतीस धर्म नियम

- ★ तीस दिन सूतक रखना।
- ★ पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक रहना।
- ★ प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- ★ शील का पालन करना व संतोष रखना।
- ★ बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- ★ द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- ★ संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- ★ निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- ★ पानी, ईन्धन और दूध को छानबीन कर प्रयोग में लेना।
- ★ वाणी विचार कर बोलना।
- ★ क्षमा-दया धारण करना।
- ★ चोरी नहीं करनी।
- ★ निन्दा नहीं करनी।
- ★ झूठ नहीं बोलना।
- ★ वाद-विवाद का त्याग करना।
- ★ अमावस्या का व्रत रखना।
- ★ विष्णु का भजन करना।
- ★ जीव दया पालणी।
- ★ हरा वृक्ष नहीं काटना।
- ★ काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- ★ रसोई अपने हाथ से बनानी।
- ★ थाट अमर रखना।
- ★ बैल बधिया नहीं कराना।
- ★ अमल नहीं खाना।
- ★ तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- ★ भांग नहीं पीना।
- ★ मद्यपान नहीं करना।
- ★ मांस नहीं खाना।
- ★ नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

मुख्य अष्ट धाम

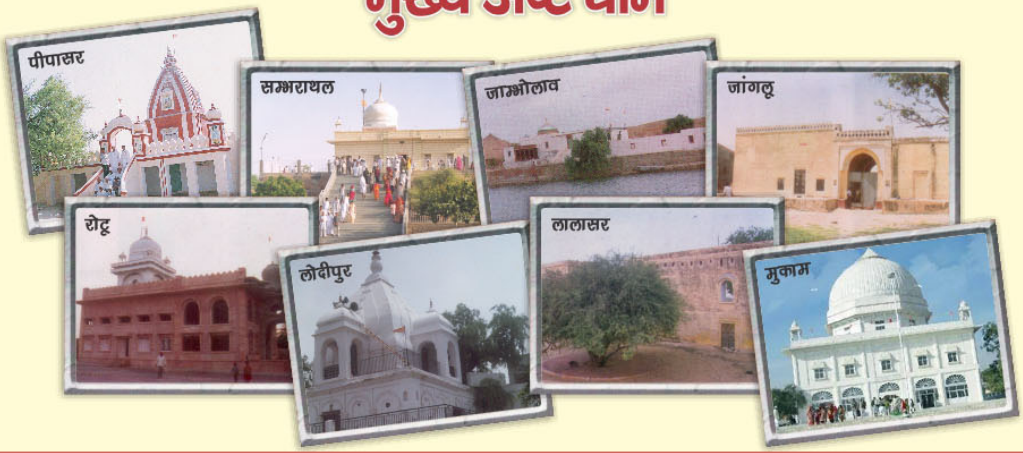

RNI No.: 12406/57

POSTAL REGD. NO.: L/Regd. NP/HSR/01/2011-2013
L/WPP/HSR/03/11-13

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 मार्च, 2012 को प्रकाशित किया।